CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ श्रीः ॥

वर्षयोगसमूह ।

पण्डित ज्वालाप्रसादजी मिश्रकृत-

भाषाटीकासहित ।

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष-"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,

बम्बई.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ श्रीः ॥

वर्षयोगसमूह।

पण्डित-ज्वालाप्रसादजी मिश्रकृत,

भाषाटीकासहित।

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष-"श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,

बम्बई.

पं० प्रेम दत्त शास्त्री
[illegible] २०२३९४
[illegible] (उ०प्र०)

संवत् १९९०, शके १८५५.

[illegible] भी
[illegible] जाते हैं इसकारण

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मुद्रक और प्रकाशक—
खेमराज श्रीकृष्णदास,
मालिक—"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस, बम्बई.

पुनर्मुद्रणादि सर्वाधिकार "श्रीवेङ्कटेश्वर" यन्त्रालयाध्यक्षाधीन हैं ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पं० प्रेम दत्त शास्त्री
जहांगीराबाद २०२३९४
बुलन्दशहर (उ०प्र०)

भूमिका.

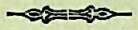

भारतवर्षकी सम्पूर्ण विद्याओंमें ज्योतिष अलौकिक विद्या है. जिसके द्वारा यहांके विद्वान् भूत, भविष्य और वर्तमानका समाचार यथार्थ जानसकते थे, यह विद्या चन्द्र सूर्य आदि ग्रहोंके आधारसे है. जिसप्रकार चन्द्र, सूर्य, जगतके प्रकाशक हैं इसीप्रकार ज्योतिषविद्या है और " चक्षुषी चन्द्रसूर्ययोः " इस श्रुतिके अवलम्बसे यह विद्या परमात्माके नेत्रवत् समझनी चाहिये. जब इस विद्याका पूर्ण प्रचार था, तबतक इस देशकी बडी उन्नति थी. बहुत क्या, इसके आधारसे यहाँके सम्राटोंके चक्रवर्ती पुत्र हुए हैं. मुहूर्तसे ही गर्भाधानादि संस्कार तथा सब शुभकार्य नगरनिर्माणादि विजययात्रा जबतक होतीरही तबतक यह देश उन्नतिके शिखरपर रहा. कालक्रमसे कुल पूज्य आचार्योंके चित्तमें आलस्य आनेलगा अर्थात् जब क्षत्री वैश्यादिने विचार किया कि, सब कृत्य आचार्यादि द्वारा पूर्ण होतेही हैं, विद्याओंमें परिश्रम क्यों करें यह विचारके जब उन्होंने पढना त्याग दिया तब कुलाचार्यभी यजमानोंको मूर्ख विचार अत्यन्त विद्या पढनेसे विरत रहे और केवल कामचलाऊ विद्या पढकर यजमानोंका मनोरंजन करने लगे. इसकारण अविद्याके मुहूर्त और फलितमें अन्तर पडने लगे. जो अच्छे विद्वान् ज्योतिषादि शास्त्रोंके ज्ञाता हैं, उनकी पहुँच उन धनीलोगोंतक वे कुलाचार्य होने नहीं देते. कारण कि, यजमानोंके सन्मुख तो उन्होंने अपनेको पूर्णविद्वान् रक्खा है. विद्वान्के जानेसे उनकी कलई खुलजाय इसकारण उनको वे प्रवेश नहीं होनेदेते और इधर वे विद्वान् वृत्तिकर्शित होनेसे विरत होतेजाते हैं. धनी यजमानोंका इस विद्यासे विश्वास उठा जाता है, जिनपर कुछ आता है वे बताना नहीं चाहते. इसकारण विद्यालुप्तप्राय होती चली जाती है. यहाँतक कि, यह विद्या भी अलभ्य रत्न होरही है. और ग्रन्थ प्रायः लुप्त होते जाते हैं इसकारण

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बुद्धिमानोंने यह विचार किया है, कि, प्राचीन ग्रन्थोंका भाषानुवाद करके सर्वसाधारणके दृष्टिगोचर कियाजाय. जिससे प्राचीन ग्रन्थोंका प्रचार और उनकी रक्षा हो. और उनसे सबकोई लाभ उठावें. इससे एक यह भी बडा लाभ होता है कि, ग्रन्थकारोंके ग्रन्थोंमें विशेषकर प्रक्षिप्तभी प्रवेश नहीं करसकते कारण कि, यह देखनेमें आया है कि, व्रतादिके निर्णयमें निज कल्पित श्लोक लिखकर प्रमाण देते हैं, कि, हमारे अमुक ग्रन्थमें यह श्लोक टिप्पणीमें लिखे हैं. श्लोक ही नहीं किन्तु ग्रन्थके ग्रन्थ जो किञ्चित्भी सार नहीं होनेसे छूछे हैं महात्माओंके नामसे छपाये जाते हैं, उदाहरणके लिये देखिये कि, मुरादाबादके एक पुरुषने घटरामायण गोसाईं तुलसीदासजीके नामसे लखनऊमें छपाई है. इसपर एक ठाकुरद्वारेके महाशय अपनी बनाई रामायणको घटरामायण तुलसीकृतके नामसे छपा रहे हैं. और घोषणा करते हैं कि, वह नहीं यह "घटरामायण" है इत्यादि. बुद्धिमान्को उचित है कि, इस धोखेमें न पडें तुलसीदास गोस्वामीने कोई घटरामायण नहीं बनाई, न कवितामें लखातीहैं. यह अपना प्रयोजन सिद्ध करनेके लिये प्रपञ्च है. इसकारण कविजनोंके प्राचीन ग्रन्थोंकी रक्षा करना अवश्य है ज्योतिषके यद्यपि अनेक ग्रन्थ छपचुके हैं, परन्तु वर्षफलके ग्रन्थ अभी उपयुक्त नहीं हुए हैं. हमको यह पुस्तक " वर्षयोगसमूह " की पण्डित नारायणदास चन्द्रावती निवासी द्वारा प्राप्ति हुई. जो बहुत पुरानी लिखी थी वर्षयोगसमूह वर्षफल जाननेके निमित्त बहुत उत्तम है और इसके योगफलादेशकी विधि बहुत मिलती है, इसकारण इस ग्रन्थका प्रकाश करना विचार भाषाटीका कर सर्वाधिकार सहित यह ग्रन्थ ' श्रीवेङ्कटेश्वर ' (स्टीम्) यन्त्राधिपति परमोदार जगद्विख्यात वैश्यवंशदिवाकर सेठजी श्रीयुत खेमराज श्रीकृष्णदासजी महाशयको समर्पण कर दिया है. पाठक महाशयोंसे प्रार्थना है कि, ग्रन्थ अवलोकन करके मेरे परिश्रमको सफल करें ॥

पंडित ज्वालाप्रसादमिश्र.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ ग्रन्थकी परिभाषा।

तहाँ द्वादशभवनोंके नाम।

इस ग्रंथमें जो विषय आये हैं उनकी परिभाषा तथा वर्ष निकालनेकी विधि लिखी जाती है. प्रथम द्वादश भवनोंके नाम लिखते हैं–

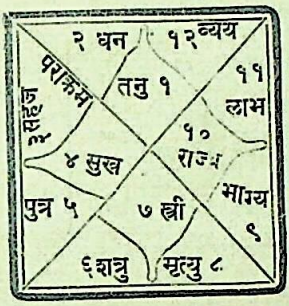

१ पहला, चौथा, सातवाँ, दशवां, इन घरों की केन्द्र संज्ञा है, इनको कंटक भी कहते है नौवे पाँचवें घरकी त्रिकोण, दूसरे पांचवें आठवें घरको तथा ग्याहरवें घरको पण फरकहते हैं. तीसरे छठे बारहवेंको आपोक्लिम छठे आठवें बारहवेंको त्रिक कहते हैं.

(१) लग्न, मूर्ति, अंग, तनु, उदय, वपु, कल्प, आद्य ये आठ लग्नके नाम हैं ॥

(२) स्व, कोश, अर्थ, कुटुम्ब, धन, ये पांच धनके नाम हैं।

(३) सहज, भ्रातृ, दुश्चिक्य ये सहजके नाम हैं ॥

(४) अम्बा, पाताल, तुर्य, हिबुक, सुहृद्, वाहन, यान, बंधु, अम्बु, नीर, जल, ये सुखके नाम हैं ॥

(५) तनय, बुद्धि, विद्या, आत्मज, वाक्य, पंचम, तनुज यह पुत्रस्थानके नाम हैं ॥

(६) रिपु, द्वेष, वैरी, क्षत, ये छठे भावके नाम हैं ॥

(७) जामित्र, अस्त, स्मर, मदन, मद, द्यून, काम, ये सप्तमके नाम हैं ॥

(८) रन्ध्र, आयु, छिद्र, याम्य, निधन, लय, अष्टम, मृत्यु ये आठवें स्थानके नाम हैं ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(९) गुरु, धर्म, नवम, शुभ, तप, मार्ग, ये नवमें स्थानके नाम हैं ॥

(१०) तात, आज्ञा, मान कर्म, आस्पद, गगन, नभ, व्योम, मेषुरण, मध्य, व्यापार, दशम, ये दशम घरके नाम हैं ॥

(११) भव आगम, प्राप्ति, आय, ये ग्यारहवें स्थानके नाम हैं ॥

(१२) प्रान्त, अन्तिम, द्वादश, रिःफ, ये बारहवें घरके नाम हैं ॥

ग्रहका उच्च नीच चक्र ।

ग्रह	सू०	चं०	मं०	बु०	बृ०	शु०	श०	रा०	के०
उच्च	मेष	वृष	मकर	कन्या	कर्क	मीन	तुला	कन्या मिथुन	तुला
नीच	तुला	वृश्चि.	कर्क	मीन	मकर	कन्या	मेष	धन	मेष

राशियोंके स्वामी ।

मेषवृश्चिकयोर्भौमः शुक्रो वृषतुलाधिपः ।
बुधः कन्यामिथुनयोः कर्कस्याधिपतिः शशी ॥ १ ॥
जीवो मीनधनुः स्वामी शनिर्मकरकुंभयोः ।
सिंहस्याधिपतिः सूर्यः कथितो गणकोत्तमैः ॥ २ ॥

अर्थ–मेष वृश्चिकका स्वामी मंगल, वृष तुलाका स्वामी शुक्र, कन्या मिथुनका स्वामी बुध, कर्कका पति चन्द्रमा ॥ १ ॥ मीन धनका मंगल, मकर कुंभका शनि, और सिंहका सूर्य है ॥

राशियोंकी स्थिरचरादिसंज्ञा ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
चर	स्थिर	द्विस्व	च०	स्थि०	द्वि०	चर	स्थि०	द्वि०	च०	स्थि०	द्वि०
पु०	स्त्री	पु०	स्त्री०	पु०	स्त्री०	पु०	स्त्री०	पु०	स्त्री०	पु०	स्त्री०
क्रर	सौम्य	क्रू०	सौ०	क्रूर	सौ०	क्रू०	सौ०	क्रू०	सौ०	क्रू०	सौ०
चतु ष्पद	चतु०	द्विप.	कीट	चतु.	द्वि०	द्वि०	की०	पूर्वार्द्ध द्विपद	च० जल	नर	जल

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दृष्टिज्ञानम्।

जिस भावमें जो ग्रह है उससे तीसरे दशवें स्थानमें एक चरण दृष्टिसे देखते हैं. ९। ५ दो चरणसे, आठवें चौथे तीन चरण सप्तममें पूरे चार चरण दृष्टिसे देखते हैं. ऐसा ही दृष्टिका फल भी है. कोई कहते हैं कि, सूर्य तीसरे, चन्द्रमा १०, मंगल नौमें, बुध पांचवें, बृहस्पति आठवें, शुक्र चौथे शनि सप्तम पूर्ण दृष्टिसे देखते हैं. यह निसर्गदृष्टि है॥

ग्रहनाम।

चन्द्र, बुध, बृहस्पति, शुक्र ये सौम्य ग्रह हैं. सूर्य, मंगल क्रूर ग्रह हैं. शनि, राहु, केतु पापग्रह कहलाते हैं. बुध जैसे ग्रहके साथ होवै तैसा फल करता है. चन्द्रमा शुक्र स्त्रीमें, शेष ग्रह पुरुषत्वमें बली होते हैं शेष निर्बल जानो, शुक्र चन्द्र मित्रके घरमें, बृहस्पति बुध लग्न घरमें; शनि स्त्रीके घरमें, सूर्य मंगल पुरुषके घरम बलिष्ठ होते हैं॥

अरिमित्रोदासीनचक्रम्।

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
मित्र	चं.बृ.म.	सू. बु.	सू.चं.बृ.	शु.सू.	मं.सू.चं.	बु. श.	शु. बु.
सम	बुध.	मं.बृ.शु.श.	शु. श.	श.बृ.मं.	श.	मं. बृ.	बृ.
शत्रु.	शु. श.	०	बु.	चं.	बु. शु.	सू. चं.	सू.चं.मं.

वर्ष निकालनेकी विधि।

वर्षनिकालनेकी सर्वोत्तम विधि तो यह है जिस संवत्का जन्म हो उसमें वर्त्तमान संवत्को घटावै, जो वर्ष निकलैं उनको १५ घडी ३१–३० साढे इकतीस पलसे गुणा करै, जो लब्धि हो उसमें इष्टके वार घडी पल जोडदेनेसे वर्षका इष्ट जानना, और जो दिनहो उसको सातसे भागदे, जो बचैं सो दिन जानना, अथवा दो वर्ष सवाये अर्धकर पुनि डयोढे करले। वार घडी पल इष्टके जोड ताहिमें दे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इन वार घडी पल इष्टोंमें वार अलग रक्खै और जन्मकुण्डलीमें सूर्यके जितने अंशबीतेहों सारणीमें देखकर उस खानेके अंकोंको उसमें जोडे, उनकी लब्धिको सारणीमें देखै जो राशीके कोष्ठमें वह अंक हों वही लग्न ठीक होगा.

उदाहरण–

संवत् १९३६ आश्विन शुक्ल नवम्यां गुरुवासरे ९० । १९ श्रवणभे ३९ । ९ तुलार्कगतांशाः ७ तज्जेष्टम् ६ । १५ वृश्चिक लग्नोदये जन्म ।

इस कुंडलीका वर्ष बनाना है तौ १९५३ में से १९३६ घटाये १७ बचे इनको १९ । ३१ । ३० से गुणा किया तौ २३ । ५५ । ३० हुए इनमें वर्षकी घडी पल मिलाये तो ३० । १० । ३० इष्ट हुआ. दूसरी विधि–

सत्रह १७ के सवाये २१		१९		
आधे		८	३०	
डचोढे.			२९	३०
	२१	२३	५५	३०
इष्टके घडी वारपल.	९	६	१५	
	२६ दिन ३०		१०	३०

छब्बीस दिनको सातसे भाग दिया तो पांच बचे, तो इससे यह सिद्ध हुआ कि, तुलाके सात अंश जानेपर पञ्चमादिनमें ३० । १० । ३० पर वर्ष आरम्भ हुआ. इसविधिसे एकदिनका अन्तर रहता है अब यह विचारना है कि उससमय क्या लग्न है, तो सारिणीमें

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तुलाके सात अंशपर ३९।३८। हैं, यह ३०। १०।३० में जोडदिये तौ ९।४८ ३० हुये यह अंक सारणीमें देखनेसे मेषलग्नमें वर्ष आरम्भ हुआ जानना उस समय जो ग्रह हों सो क्रमसे सब रख देना॥

मुन्था रखनेकी यह विधि है कि, बीतेहुये वर्षोंमें जन्मलग्न मिलाकर बारहसे भागदे जो शेष रहै सो जन्मलग्नसे मुन्थाका स्थान जानै जैसे १७ में ८ मिलाया २५ हुए बारहसे भाग दिया एक बचा तौ मेषके स्थानमें मुंथा रखदो।

मुद्दादशा बनानेका क्रम।

जन्मनक्षत्रकी संख्यामें गताब्दकी संख्या मिलावै इसमेंसे दो घटाकर नौका भागदे जो शेष रहै वहीं से दशा आरंभ होगी यथा श्रवण नक्षत्र तेंईसवां है इसमें सतरह जोडनेसे ४० हुए नौसे भाग दिया ४ बचे तो चौथी राहुकी दशासे प्रारम्भहुआ जानना॥

दशाके मास दिन।

सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ग्रहदशा.
००	१	००	१	१	१	१	०	२	महीना.
१८	००	२१	२४	१८	२७	२१	२१	००	दिन.

पञ्चाधिकारी।

वर्षमें पाँचअधिकारी बनावै मुंथेश, वर्षलग्नेश, जन्मलग्नेश त्रिराशिपति। दिनपति वा रात्रिपति राशिपतिचक्रसे यह बात जानने योग्य है. जिस राशिमें मुन्था हो उसका स्वामी मुन्थेश वर्षलग्नका स्वामी वर्षलग्नेश जन्मलग्नका स्वामी दिनमें वर्ष प्रवेश होय तो सूर्य राशिका स्वामी, रात्री में प्रवेश होय तो चन्द्रराशिका स्वामी लिखै. त्रिराशीशचक्रमें समझलेना॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राशयः.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
दिवास्वा.	सू.	शु.	श.	शु.	शु.	बु.	श.	शु.	सू.	सू.	श.	शु.
रात्रिस्वा.	बृ.	चं.	बु.	चं.	बृ.	चं.	बु.	म.	बु.	चं.	बु.	मं.
हृदास्वा.	श.	मं.	बृ.	मं.	श.	चं.	बृ.	म.	श.	मं.	बृ.	मं.

इसप्रकार पञ्चाधिकारी लिखकर ग्रह अधिकारी देखै जिसके दो तीन अधिकार आवैं सो बलवान् जानै, और जिस दिनसे वष प्रारम्भ हो वह सूर्यके अंश ग्रहके मासदिनमें जोडता चलाजाय जैसे ६ । ७ पर राहुकी दशा प्रारंभ हुई तौ १ । २४ मिलानेसे ८ । १ धनके एक अंशतक रहैगी इसीप्रकार और भी जानना ॥

त्रिपताकी चक्र वेध देखनेको लिखना इसपर बारह राशि स्थापित करना ग्रहन्यास इसप्रकार लिखै कि गतवर्षमें एक मिलाय आठसे भागदे, शेष रहै सो जन्मकालमें चंद्रराशिसे शेष स्थानमें चन्द्रमा लिखना चारसे भागदेकर जो शेष बचै उसे वहाँ अपने स्थानसे लिखना, और केतु अपने स्थानसे पीछे लिखै तौ त्रिपताकी चक्रसे स्पष्ट होता है ॥

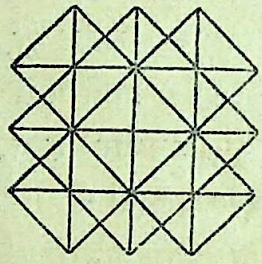

चन्द्रमासे ग्रहोंका वेध देखै, राहुसे चंद्रवेध होय तो अरिष्ट, सूर्यसे होय तौ ताप, शनिसे रोग, मङ्गलसे पीडा, शुभसे जयप्राप्ति सुखलाभ हो, शुभग्रहका वल देखकर वेधम फल कहना ॥

इसप्रकार छोटे विद्यार्थियोंको यह वर्ष बनानेकी बहुत सरल रीति लिखदी है, इसको देखकर एकही बारमें वर्षबनाना ध्यानमें आसकताहै. वर्ष बनाकर सधारण पद्मकोशसे और विशेषफल इस ग्रन्थसे कहसकते हैं ॥

पं० ज्वालाप्रसाद मिश्र,

दीनदारपुरा (मुरादाबाद).

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ वर्षयोगसमूह ।

भाषाटीकासमेत ।

लग्नाधिनाथः खलु रन्ध्रनाथ एको यदि स्यात्खलु रंध्रभावे ॥ तदा हि वर्षे रुधिर-प्रकोपं शरीरकष्टं विविधप्रकारैः ॥ १ ॥

मङ्गलाचरणम् ।

श्लोक ।

नमस्कृत्य गुरुं शान्तं परमानन्ददायकम् ।
वर्षयोगसमूहस्य भाषाटीका विरच्यते ॥ १ ॥

दोहा–गौरि गिरा गणपति गिरिश, रविशशि सिद्ध मनाय ।
वर्षयोग शुभ ग्रंथकी, भाषा लिखत बनाय ॥ १ ॥

जो लग्नका और आठवे घरका स्वामी एक होकर अष्टम स्थानमें स्थित हो तो उस वर्षभर रुधिरका कोप और शरीरमें अनेकप्रकारके कष्ट हों ॥ १ ॥

सप्तमस्थो यदा चन्द्रो राहुणा यदि संयुतः ॥ तदा वर्षे महत्कष्टं स्त्रीणां कष्टं विशेषतः ॥ २ ॥

जो सप्तम स्थानमें चंद्रमा राहुके साथ हो तो उस वर्षमें अधिक कष्ट हो विशेषकर स्त्रीको कष्ट हो ॥ २ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चन्द्रात्पंचमगो जीवोजीवान्नवमगः शशी ॥
तदारिष्टं न कुर्वीत रिपुरोगप्रणाशनम् ॥३॥

जो चन्द्रमासे पंचमस्थानमें बृहस्पति, वा बृहस्पतिसे नवम स्थानमें चन्द्रमा हो तो अरिष्ट नहीं होता. शत्रु और रोगका नाश हो ॥ ३ ॥

लग्नस्थिते रन्ध्रपतौ सपापे लग्नाधिपे चन्द्रयुतेऽष्टमस्थ ॥ तदा च वर्षे तनुसंक्षयः स्याच्छोकादिरोगेण वदन्ति सन्तः ॥ ४ ॥

जो अष्टमघरका मालिक पापग्रह सहित लग्नमें स्थित हो और लग्नका मालिक चन्द्रमाके सहित अष्टम स्थानमें स्थितहो तो उस वर्षमें शोक रोगादिसे शरीर क्षय होजाय यह विद्वान् कहते हैं ॥ ४ ॥

षष्ठाष्टमे च लग्नशो रन्ध्रस्थे भौमचन्द्रमाः।
तदा वष विषान्मृत्युरथवा व्याघ्रदारणात् ॥ ५ ॥

लग्नका अधिपति छठे वा अष्टमस्थानमें हो, अष्टममें मंगल और चन्द्रमा हो तो उसवर्षमें विष अथवा व्याघ्रसे मृत्यु हो ॥ ५ ॥

कर्मेशोऽस्तंगते रन्ध्रे षष्ठस्थे शनिचन्द्रमाः॥
तदा वर्षे नृपान्मृत्युस्तथा रोगोत्थयातना६॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो कर्म १० स्थानका अधिपति सातवें हो अष्टम घरमें अस्त हो और छठे स्थानमें शनि चन्द्रमा हों तो उसवर्षमें राजा वा रोगसे मृत्यु हो ॥ ६ ॥

मृगपतिर्मदगः सबलो यदा खलखगैः सहितो न च वीक्षितः ॥ मुनिवरैर्गदितं बहुलं सुखं युवतिवर्गसुखंविविधं तदा॥ ७ ॥

जो चन्द्रमा बलसहित सप्तमस्थानमें प्राप्तहो क्रूरग्रहोंके साथ न हो न उसको क्रूरग्रह देखते हों तो मुनिजनोंने कहा है कि अनेक प्रकारके विविध सुख स्त्री आदिक प्राप्त हों ॥ ७ ॥

लग्नं यदा दुष्टखगैः समेतं सौम्यैः खगैर्नो सहितं च दृष्टम् ॥ प्राप्नोति मध्यं बहुलं च वर्षं तदा विवादं कुजनैर्नराणाम् ॥ ८ ॥

जो लग्नमें क्रूरग्रह पडे हों और सौम्यग्रह उसको न देखते हों तो वर्ष मध्यम है दुष्ट मनुष्योंसे विवाद अधिक हो ॥ ८ ॥

समाधिनाथो यदि शत्रुनाथ एको यदि स्यात्तनुभावयातः ॥ तदाहि वर्षं प्रकरोति शीघ्रमश्वादिरूढं नृपदत्तमानम् ॥ ९ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो ग्यारहवें और छठे घरका मालिक एकही होकर लग्नमें बैठा हो तो उस वर्षमें घोडे आदिकी सवारी और राजासे मान मिलै ॥ ९ ॥

अथ संतानयोगाः ।

तुले विलग्ने शनिसंयुते च स्यात्सप्तमस्वाष्टमगः शशी च ॥ तदा च वर्षे धनधान्ययुक्तं संतानलाभं कुरुते नराणाम् ॥ १० ॥

जन्म लग्न तुला शनिसंयुक्त हो, सप्तम अष्टम चन्द्र हो तो उस वर्षमें धनधान्य और सन्तानकी प्राप्तिहो १० ॥

सप्तमस्थो यदा राहुर्भौमचन्द्रसमन्वितः ॥ नृभिःक्लेशो महावर्षे तदास्त्रीनिधनं धनम् ११

जो सातवें स्थान राहु यदि मंगल और चन्द्रमाके सहित हो तो उस वर्षमें मनुष्योंसे क्लेश और स्त्री धनकी नष्टता होती है ॥ ११ ॥

यदि सुताधिपतिर्व्ययभावगो व्ययपतौ सुतभावनिरीक्षके ॥ तदपि वर्षफलं यदि कन्यकाधनलयं कुरुते सुतपीडनम् ॥ १२ ॥

जो पंचम घरका मालिक बारहवें स्थानमें बैठा हो बारहवें घरका मालिक पंचम स्थानको देखता हो तो वर्षका फल कन्या हो धनव्यय और पुत्रोंको पीडा हो ॥ १२ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कर्माधिनाथो यदि कर्मभावे धनाधिनाथो यदि पंचमस्थः ॥ तदा नराणां धनधान्य-लाभं शत्रक्षयं रिष्टहनं च वर्षे ॥ १३ ॥

यदि कर्मस्थानका अधिपति कर्मस्थानमें हो और दूसरे घरका मालिक पंचमस्थानमें हो तो मनुष्योंको धनधान्य लाभ हो, शत्रुक्षय तथा अरिष्ट भंग हो१३॥

संताननाथो रविमडलस्थः संतानभावे यदि पापखेटाः ॥ तदा च वर्षे धनधान्य-नाशं संतानकष्टं कथितं मुनीन्द्रैः॥ १४ ॥

जो पांचवें घरका मालिक सूर्यके स्थानमें हो, पांचवें घरमें पापग्रह हों तो उस वर्षमें धनधान्यका नाश, संतानका कष्ट हो, ऐसा मुनिजन कहते हैं १४॥

मृत्युर्निवेशो यदि शत्रभावे लाभाधिपो लाभगते नराणाम् ॥ सुतस्य सौख्यं गृह-मित्रलाभं प्रब्रूंति वष प्रकरोत्यरिष्टम् ॥१५॥

अष्टमस्थानका स्वामी यदि शत्रुभावमें हों लाभ-स्थानका स्वामी अपने ग्यारहवें स्थानमें ही हो तो पुत्र स्त्री मित्रोंका लाभ हो तथा दुःख और अरिष्ट हो॥१५॥

द्युनेशो यदा केन्द्रगो वीययुक्तःशुभैः संयुतो वीक्षितो वांगनानाम् ॥ कलत्रांगसौख्य धनं धान्यलाभं सुपुण्योदय शत्रनाशं करोति १६

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सातवें घरका स्वामी यदि केन्द्रस्थानमें प्राप्त हो, शुभग्रहोंसे संयुक्त हो; अथवा उसपर शुभग्रहोंकी दृष्टि हो तो स्त्रीको सुख धनधान्यका लाभ पुण्यका उदय और शत्रुनाश होता है ॥ १६ ॥

मुंथापतिर्लग्नपतिर्युतश्चेन्मृतिस्थले मृत्यु-
समं करोति ॥ गुह्येन्द्रिये वा रुधिरप्रकोपा-
त्कंठावरोधः कथितो मुनीन्द्रैः ॥ १७ ॥

यदि मुंथापति और लग्नपति एक साथ अष्टम स्थानमें स्थितहों तो मृत्युकी समान मनुष्यको कर देते हैं अथवा गुह्येन्द्रिय, पीडा रुधिरका कोप, कंठावरोध होता है यह मुनिजन कहते हैं ॥ १७ ॥

लग्नाधिनाथो यदि कर्मनाथ एकोयदिस्यात
किल पंचमस्थः ॥ तदाहि वर्षे धनधान्य-
लाभं नृपोत्तमैः प्रीतियशोदयं च ॥ १८ ॥

जो लग्नपति और कर्मस्थानके अधिपति यदि एक हों और पञ्चमस्थानमें स्थित हों तो वर्षमें धनधान्य लाभ; राजोंसे प्रीति और यशका उदय हो ॥ १८ ॥

धनस्थितो नीचगृहे सपाते धनाधिनाथो
यदि पापयुक्तः॥तदा हि वर्षे कुरुते नराणां
धनादिचिंतां विविधप्रकारैः ॥ १९ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धनस्थानमें नीचग्रह पापयुक्त स्थितहो; वा धनका स्वामी यदि पापयुक्त हो तो उस वर्षमें अनेक प्रकारकी धनादिचिन्ता रहती है ॥ १९ ॥

स्त्रीराशिनाथो यदि कर्मभावे कर्माधिनाथो नवपंचमस्थः ॥ तदा हि वर्षे प्रकरोति नूनं निहंति कष्टं कथितं मुनीन्द्रैः ॥ २० ॥

स्त्रीराशिपति यदि कर्मभावमें स्थितहो और कर्माधिपति नौवें पांचवें स्थानमें स्थित हो तो उस वर्षमें अनेक प्रकारके कष्ट दूर होते हैं ऐसा मुनिजन कहते हैं॥२०॥

मुंथाधिनाथो यदि मृत्युभावे कर्माधिनाथो नवपंचमस्थः ॥ तदा हि वर्षे कुरुतेंऽगपीडां सहोदरैर्गुल्मकृतं च कष्टम् ॥ २१ ॥

जो मुंथापति मृत्युभावमें स्थितहो; कर्मपति नौवें पांचवें घरमें स्थित हो तो उस वर्षमें अंगपीड़ा, भ्रातृपीड़ा, गुल्मरोगका कष्ट हो ॥ २१ ॥

कन्या सिंहे भास्करे मूर्तिसंस्थे जायाभावे कर्मगे पापयुक्ते । तस्मिन्वर्षे मानवानां च कष्टं भार्यामृत्युर्निश्चितं तत्र वर्षे ॥२२॥

जो कन्या और सिंहके सूर्य मूर्तिमें स्थितहों और सप्तम वा कर्मस्थानमें पापग्रह युक्त हों तो उसवर्षमें मनुष्योंको कष्ट तथा भार्याकी मृत्यु निश्चय हों ॥ २२ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

देवार्चिते जन्मनि यत्र राशौ वर्षे स राशि-
र्यदि पंचमस्थः ॥ तत्र स्थिते वर्षपतौ बुधे
वा भौमेऽथवा पुत्रसमुद्भवः स्यात् ॥ २३ ॥

जो गुरु जन्ममें जिस राशिपर हों वर्षमें वह राशि यदि पंचममेंहो अथवा उस स्थानमें वर्षपति वा बुधहो अथवा मंगल हो तो पुत्रकी प्राप्ति हो ॥ २३ ॥

यद्राशिगे जन्मनि सूर्यपुत्रे वर्षे च तद्रारि-
भवं विलग्नम् ॥ संतानकष्टं च कुजे सुतस्थे
विलोमगः पुत्रहरो निरुक्तः ॥ २४ ॥

जन्मसे सूर्यपुत्र जिस राशिपर स्थितहो, वर्षमें उसी राशिपर हो, वा लग्नमें स्थित हो और मंगल पुत्रस्थानमें स्थितहो तो वा विलोमहोतो पुत्रकाहरनेवाला कहाहै २४

अथ नेत्ररोगः ।

लग्ने व्यये गते शुक्रे सूर्य भौमसमन्विते ॥
नेत्ररोगंविजानीयात्कथितं च मुनीश्वरैः २५॥

जो शुक्र लग्नमें अथवा बारहवें स्थानमें सूर्य और मंगलके साथ हो तो उस वर्षमें नेत्ररोग हो ऐसा मुनिजनोंने कहा है ॥ २५ ॥

धने व्यये गते पापा लग्ने च सप्तमे तथा ॥
न सौम्ययुक्तं दृष्टं हि अंधं दोषं तदा समे २६॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो पापग्रह धनस्थान बारहवें लग्नमें वा सप्तमस्थानमें प्राप्तहो और सौम्यग्रहकी दृष्टि न हो तो अंधदोष होगा इसमें सन्देह नहीं ॥ २६ ॥

अथ सुखासनयोगः ।

कर्के गुरौ सौख्यगते बलिष्ठे सौम्यैर्ग्रहैर्युक्तनिरीक्षिते च । लग्नाधिपे कर्मगतेऽत्र वर्षे सुखासनं योगमथामनन्ति ॥ २७ ॥

जो कर्कके गुरु चौथे स्थानमें हो, बलवान् हो सौम्य ग्रहोंसे युक्त हो; वा देखेगयेहों और लग्नपति कर्मस्थानमें प्राप्तहो तो यह सुखासनयोग है शुभफल देताहै २७

मुंथा सचंद्रो यदि पंचमस्थः संताननाथोऽप्यथ वीर्ययुक्तः॥तदा च वर्षे कुरुते नराणां पुत्रोदयः स्यात्कथितं मुनीन्द्रैः ॥ २८ ॥

जो चन्द्रमा मुंथाके सहित पंचमस्थानमें स्थित हो और संतानके पतिके साथहो. अथवा पंचमस्थानका स्वामी बलवान् हो तो उस वर्षमें अवश्य पुत्र हो यह मुनिजन कहते हैं ॥ २८ ॥

अथाश्वयोगः ।

षष्ठे चंद्रे जायते भौमयुक्ते कर्मस्थाने देव-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पूज्ये ससौम्ये ॥ तस्मिन्वर्षे मानवानां प्रकुर्य्यादभूपालेभ्यश्चाश्वलब्धिः सुखं च२९

जो छठे चन्द्रमा मंगलके सहित और कर्मस्थानमें बृहस्पति, सौम्यग्रहयुक्त हों, उस वर्षमें मनुष्योंको राजासे अश्वादिकी प्राप्ति और सुख हो ॥ २९ ॥

कर्माधिनाथे यदि सौम्यखेटे धने सुखे वा सहजालयस्थे॥चतुष्पदस्याधिपतिश्च केंद्रे अश्वादिलाभं नृपसन्निधानात् ॥ ३० ॥

कर्मस्थानका स्वामी यदि सौम्यग्रहोंके सहित सुख वा तीसरे स्थानमें हो तथा चतुष्पद स्थानका स्वामी केन्द्रमें हो तो राजासे आश्वादिका लाभ हो ॥ ३० ॥

अथारिष्टयोगाः ।

वर्षलग्नपकेंद्रेशौ चतुर्थनिधनांत्यगौ ॥ मुंथा वा तद्युता यत्र तद्वर्षं मरणप्रदः ॥३१॥

वर्षलग्नपति केन्द्रपति चौथे अष्टमस्थानमें प्राप्त हो और मुंथा भी एकही स्थानमें उनके साथ हो तो उस वर्षमें मरणहो इसमें सन्देह नहीं ॥ ३१ ॥

यदा सवीर्यौ मुथहाधिनाथो लग्नाधिपो जन्मविलग्नपो वा॥केंद्रत्रिकोणायधनस्थितोऽसौ सुखार्थहेमांबरलाभदाः स्युः॥ ३२ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो मुंथापतिभी बलवान्हो,वर्ष लग्नका अधिपति वा जन्मस्थानका लग्नपतिकेन्द्रत्रिकोण वा धनमें स्थित हो तो सुखकी प्राप्ति सुवर्ण वस्त्र आदिका लाभहो ३२

केंद्रत्रिकोणभवने मुंथहाधिपे च लाभे धने भवति चेच्छुभदृष्टियुक्ते ॥ कीर्तिप्रवृद्धिर-मला विमला च कीर्ती राज्यात्सुखं भवति बंधुसुतादिसौख्यम् ॥ ३३ ॥

केंद्रत्रिकोणस्थानमें मुंथापति हो अथवा लाभ वा धनस्थानमें स्थित हो तो कीर्तिकी वृद्धि उज्ज्वलकीर्ति राज्यसे सुख और बंधु सुत आदिका सुख होताहै३३॥

यदा छिद्रनाथस्तनुस्थानगो वा तदा लग्न-नाथोऽरिभावे यदा स्यात् ॥ तदा वर्षमध्ये नराणां च मृत्युर्भवेत्तस्य चायुर्ध्रुवं दैव-योगात् ॥ ३४ ॥

जोअष्टमस्थानका अधिपतितनुस्थानमेंप्राप्तहोऔर लग्नका अधिपति शत्रुभावमें स्थितहोतोउसवर्षमें मनुष्यकी मृत्युहो,दैवयोगसेही उसकी आयुहोसकतीहै३४॥

छिद्राधिनाथो रविमंडलस्थो लग्नाधिना-थो यदि नीचगेहे ॥ तदा हि वर्षे तनुसंक्षयः स्याच्छूलादिघातः कथितं मुनीन्द्रैः ॥ ३५ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथवा अष्टमघरका स्वामी सूर्यमंडलमेंहो और लग्नका अधिपति नीचस्थानमें हो तोभी उसवर्षमें शरीरका क्षय शूलका आघात हो ऐसा मुनिजनोंने कहाहै३५॥

चंद्रे यदा मंदयुतेऽष्टमस्थे लग्नाधिपे वा सहिते च दृष्टम् ॥ तदा च रोगान्कुरुते नराणां विषूचिकादींश्च गदेन रिष्टम् ॥३६॥

जो चन्द्रमा शनिके साथ अष्टमस्थानमें स्थित हो और लग्नकेअधिपतिके साथहो,अथवा लग्नका अधिपति देखता हो तो मनुष्यकोविषूचिकादिअरिष्टरोगहो३६॥

लग्नाधिनाथो मृतिभावनाथ एको यदि स्यात्किल तत्र वर्षे ॥ तद्वर्षमध्ये मरणं नराणां सुखे व्यये चाष्टगमेऽरिभावे ॥ ३७ ॥

जो वर्षमें लग्नपति और अष्टमस्थानका अधिपति दोनों एकही और सुखस्थान बारहवें व अष्टमस्थानमें वा छठे हो तो मनुष्यका मरण अवश्य होताहै ॥३७॥

सहजपतिर्यदि सहजे बुधगुरू यदि शुक्रसमन्वितौ ॥ सकलारिष्टहरं तदा ग्रहाणां यदि चास्तगृहे विजयस्तदा ॥ ३८ ॥

तीसरे स्थानका स्वामी यदि तीसरे स्थानमें हो बुध, गुरु, शुक्र यदि एकस्थानमें हो तो ग्रहोंका सम्पूर्ण

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अरिष्ट दूरहोताहै जो अस्त अर्थात् सप्तमके हों तो विजय करतेहैं ॥ ३८ ॥

मृत्युस्थिते जन्मनि भूमिपुत्रे वर्षे चलाढ्ये दशमं प्रपन्नम् ॥ चतुष्पदात्स्यात्पतनं तथाब्जे तदीक्षिते वा विनिहन्त्यरिष्टम् ३९॥

जो मंगल मृत्युस्थान जन्मस्थान वा दशवें घरमें स्थितहोतो उस वर्षमें चौपायेसे चोटलगै, तथासुखस्थानमेंहो तो वा चन्द्रकी दृष्टिहो तो अरिष्ट दूरहोताहै ३९॥

एकोपि जीवबुधसोमभृगुश्च केंद्रे नीचारिभैऽस्तरहिते सहितश्च सौम्ये॥उद्दालकादिऋषिभिर्वचनं प्रयुक्तं सर्वं त्वरिष्टमथ हंति तदाहि वर्षे ॥ ४० ॥

यदि एकभी बृहस्पति, बुध, चन्द्रमा, शुक्र, केन्द्रमें हो सौम्यग्रहके साथहों, नीचके न हों, अस्त न होगये हों, तो सम्पूर्ण अरिष्ट दूर होतेहैं ऐसा उद्दालक आदि ऋषियोंने कहा है ॥ ४० ॥

छिद्राधिनाथो तनुभावयातो लग्नाधिपश्छिद्रगृहे यदि स्यात् ॥ तद्वर्षमध्ये प्रकरोत्यरिष्टं धने कुटुम्बे स्वजने कुटुम्बे ॥४१॥

जो अष्टमस्थानका स्वामी लग्नमें पडा हो और लग्नका स्वामी अष्टम हो तो उस वर्षमें अरिष्ट हो, धन, स्त्री, कुटुम्बमें कष्ट हो ॥ ४१ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दैत्येज्यदेवेज्ययुते महीजे,चास्तंगते लग्न-
परंध्रसंस्थे ॥ चन्द्रान्विते शीतलकादिरो-
गात्करोत्यरिष्टं खलु तत्र वर्षे ॥ ४२ ॥

जो मंगल, शुक्र,गुरुके साथ हों सप्तमघरमेंहों और लग्नका स्वामी अष्टममें प्राप्तहो, चन्द्रमा संयुक्त होतो शीतलादि रोग करताहै और अरिष्टभी है ॥ ४२ ॥

वर्षलग्नपरन्ध्रेशौ चतुर्थनिधनांत्यगौ॥मृत्यु-
हा तत्रगा यत्र तद्वर्षे मरणप्रदः॥लग्ने पापेऽ-
ष्टमे पापःसप्तमे पापसंभवः॥तदावर्षे विजा-
नीयाच्चोराग्निशस्त्रतो भयम् ॥ ४३ ॥

वर्षलग्नपति तथा अष्टमेश चौथे वा अष्टममें हो उसीस्थानमें मुंथा हो तो उस वर्षमें मृत्युहो लग्न अष्टम सप्तमस्थानमें यदि पापग्रह हो तो उस वर्षमें चोर, अग्नि, शस्त्रसे भय हो ॥ ४३ ॥

सुखस्थाने यदा सौरिः कर्मस्थाने क्षितेः
सुतः ॥ स्वस्वामी नीचवक्रास्तो मातापि-
तृक्षयो ध्रुवम् ॥ ४४ ॥

जो सुखस्थानमें शनि, कर्मस्थानमें मंगल हो, धनका स्वामी नीचका वक्री होकर अस्त होगया हो तो मातापिताका अवश्य क्षय हो ॥ ४४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धने व्यये गताः पापा लग्ने च सप्तमे तथा ॥ न सौम्ययुक्तदृष्टं हि आंध्यं भवति निश्चितम् ॥ ४५ ॥

दूसरे बारहवें पहले सातवें स्थानमें पापग्रह हों और सौम्यग्रहकी दृष्टि उनपर न हो तो वह प्राणी अवश्य अंधा हो जाय ॥ ४५ ॥

अस्तं गते भार्गवदेवपूज्ये नीचस्थितो लग्नपतिर्यदा स्यात् ॥ तदा हि वर्षे कुरुते नराणां शस्त्राग्निघातेन वदंति मृत्युम् ॥ ४६ ॥

शुक्र और बृहस्पति अस्त सप्तम हो गये हों लग्नपति नीचका हो तो उस वर्षमें शस्त्र तथा अग्निघातसे मृत्यु हो ऐसा महात्मा कहते हैं ॥ ४६ ॥

लग्नाधिनाथो मृतिभावनाथ एको यदि स्याद्रविमंडलस्थः ॥ न सौम्यकेंद्रे भवतीह वर्षे रिष्टप्रदं सौख्यविवर्जितं च ॥ ४७ ॥

जो लग्नपति और अष्टमस्थानका स्वामी एकही हो और सूर्यके साथ हो, केन्द्रमें सौम्यग्रह न हो तो अरिष्ट हो सुखकी प्राप्ति न हो ॥ ४७ ॥

मृत्याधिनाथो यदि मृत्युभावे छिद्राधिनाथो रविभौमयुक्तः ॥ तदा नराणां कफपित्तरोगौ क्षयोद्भवःस्यात्तनुसंक्षयश्च ॥ ४८ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो मुंथापति अष्टम हो, अष्टमेश रवि मंगलसे युक्त हो तो मनुष्यका कफ पित्त रोगोंसे शरीर नष्ट हो इसमें संदेह नहीं ॥ ४८ ॥

चेल्लग्ननाथो विबलो मृतीशो लग्ने गतो भास्करदृश्यमूर्तिः ॥ शस्त्राभिघातं बहुधा च कष्टं रोगं शरीरे मरणेन तुल्यम् ॥ ४९ ॥

जो लग्नेश निर्बल हो, अष्टमेश वर्षलग्नमें हो, लग्नको सूर्य देखता हो तो उस वर्षमें शस्त्रघात अनेक कष्ट रोगसे प्राणोंको मरण तुल्य पीडा हो ॥ ४९ ॥

कन्यासंस्थे सप्तमे दुःसरापे लग्ने सूर्ये अष्टमे भार्गवे च॥ नूनं वान्यत्कामिनीसंगमश्चाकस्माद्दुष्टादात्मजानां च मृत्युः॥५०॥

सप्तमस्थानमें कन्याराशिपर पापग्रह हो लग्नमें सूर्य अष्टममें शुक्रहो तो अवश्य स्त्रीसंग वा अकस्मात् सन्तानकी मृत्यु हो ॥ ५० ॥

निधनभवननाथो द्रव्यभावे नराणां व्ययभवनपतिर्वा मृत्युभावे यदि स्यात् ॥ तनुभवनपतिः स्यान्निर्बलो याति वर्षे भुजगदशनमृत्युश्चेश्वरश्चेत्तु रक्षेत् ॥ ५१ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो अष्टमेश द्रव्यस्थानमें हो बारहवें स्थानका पति अष्टमहो तनुका स्वामी निर्बलहो तो सर्पके काटनेसे मृत्यु हो चाहै ईश्वर भी रक्षाकरै ॥ ५१ ॥

क्रूरान्विते क्षितिसुते मृगगेऽग्निभीतिश्चंद्रान्विते धनसुखं नृपतेर्नराणाम् ॥ सौम्ये च भौमखलदृक्सहितेऽर्धदग्धःसंजायते हननमामरणं मृतिस्थे ॥ ५२ ॥

जो मंगल क्रूरग्रहोंके साथ मकरका हो तो अग्निभय चन्द्रमासे युक्त हो तो उस मनुष्यको राजासे धन और सुख, और सौम्यग्रह क्रूरग्रहोंसे दृष्ट अथवा युक्त हो तो अर्ध दग्धता होती है. और जब कि, वह अष्टममें स्थित हो तब मरण होता है ॥ ५२ ॥

भूपुत्रान्वितचंद्रमा मृतिगतो गुप्तं च दुःखं भवेत्पापैर्दृष्टिवपुःपतिर्निधनगो जीवे च भूपाश्रये ॥ सूर्ये चक्षुरुजं भयं भृगुसुते श्लेष्मादिरोगान्वितः स्यान्मन्दे जलजं भयं मृतिपतौ पापेन दृष्टे मृतिः ॥ ५३ ॥

जो मंगलके सहित चन्द्रमा अष्टमहो तो गुप्त दुःख हो लग्नेश पापग्रहोंसे देखागया हो वा जीव भृगु अष्टम हो, सूर्य हो तो नेत्ररोग शुक्र हो तो भय और श्लेष्मा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दिरोग हो, शनि हो तो जलसे भय और अष्टमेशको पापग्रह देखता हो तौ मृत्यु हो ॥ ५३ ॥

रात्रीश्वरो भास्करमंडलस्थः षष्ठे व्यये वा मृतिभावयाते ॥ त्रिदोषतायाः खलु शंकया च करोत्यरिष्टं प्रवदंति सन्तः ॥ ५४ ॥

रात्रिपति सूर्यके साथहो, वा छठे बारहवें अष्टम स्थानमें हो तो त्रिदोषकी शंकासे अरिष्टहो यह महात्मा कहतेहैं ॥ ५४ ॥

लग्नाधिपो मृत्युगतेस्तजातः कर्माधिपो वा यदि शत्रुभावे ॥ धनाधिपो द्वादशगे सवर्षे नरं दरिद्रं प्रवदन्ति संतः ॥ ५५ ॥

जो लग्नपति मृत्युस्थानमें जाकर अस्त होगयाहो कर्मेश छठे हो धनेश बारहवें हो तो मनुष्यको दरिद्र करदेतेहैं ऐसा सब कहते हैं ॥ ५५ ॥

लग्नाधिनाथो रविमंडलस्थो लग्ने यदा नीचगते ग्रहे च ॥ व्ययस्थिते बंधुपतौ सचाब्दे करोति मर्त्यं विषजं भयं च॥५६॥

जो लग्नेश सूर्यके साथ हो अथवा लग्नमें नीचका ग्रह हो,सहजपति बारहवें हो तो मनुष्यको विषका भय हो ॥ ५६ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नंदे द्वितीये सुगते हिमांशौ पापादिते कर्म-
गते कुपुत्रे ॥ लग्नाधिपे मृत्युगते सवर्षे
मृतिर्विषेभ्यः प्रवदंति संतः ॥५७ ॥

दूसरे स्थानमें शनि पंचममें चंद्रमा मंगल पापग्रहयुक्त कर्मस्थानमें हो लग्नपति मृत्युभावमें स्थित हो तो उस वर्षमें विषसे मृत्यु होय यह महात्मा कहते हैं ॥ ५७ ॥

कर्मस्थिते सूर्यसुते दिनेशे रंध्रस्थिते
च्छिद्रपे चंद्रयुक्ते ॥ जन्माधिपे शत्रुगते
सवर्षे करोत्यरिष्टं लकुटप्रहारैः ॥ ५८ ॥

जो शनि कर्मस्थानमें हो, सूर्य अष्टम अष्टमेश चंद्रमाके साथ पडा हो, लग्नेश छठे हो तो लकुट प्रहारसे अरिष्ट करते हैं ॥ ५८ ॥

लग्ने भौमे पापयुक्तेथ चंद्रे पुत्रस्थाने जन्मपे
मृत्युभावे ॥ मंदे युक्ते क्रूरदृष्टे सवर्षे
विद्युत्पातान्मानवानां हि मृत्युः ॥ ५९ ॥

लग्नमें मंगल पापयुक्त और चन्द्रमा पुत्रस्थानमें हो लग्नेश अष्टम हो शनि क्रूरग्रहोंकी दृष्टि युक्तसे हो तो उस वर्षमें बिजलीसे मृत्यु हो ॥ ५९ ॥

कर्माधिनाथो यदि कर्मभावे सौम्यैश्च युक्ते
ह्यथवा विलोक्य ॥ लग्नाधिपे केंद्रगते तदा-
ब्देरिष्टं विनाशं नृपतोऽर्थलाभम् ॥ ६० ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो कर्मेश कर्ममें स्थित हो सौम्यग्रहोंसे युक्त हो अथवा उसको सौम्यग्रह देखते हो लग्नेश केन्द्रमें स्थित हो तो अरिष्टनाश तथा राजासे धन मिलै ॥ ६० ॥

व्ययेशे वा विलग्नेशे व्ययगे पापसंयुते ॥
पीडास्याद्दहुधादंडाद्व्ययनाशःसदैवहि ६१॥

बारहवें स्थानका स्वामी लग्नस्थानका स्वामी बारहवें घरमें पापग्रहके सहित हो तो दंडसे पीडा हो तथा निरन्तर खर्च हो ॥ ६१ ॥

जीवे खलाढ्ये च यदाऽष्टमस्थे चंद्रे व्ययस्थे यदि मंदयुक्तेा।तदा हि वर्षे धनहानिदंडाद्राज्ञश्च कष्टं विविधप्रकारैः ॥ ६२ ॥

जो अष्टम स्थानमें गुरु पापग्रहयुक्त हो चन्द्रमा बारहवें शनियुक्त हो तो उस वर्षमें दंडसे धन और राजासे अनेक प्रकारका कष्ट मिलै ॥ ६२ ॥

कर्माधिपे नीचगतेऽष्टमस्थे कर्मस्थिते पापखगे यदा च ॥ हरंति राज्यं विपुलं नराणां तदा सुखं नाल्पतरं च वर्षे ॥ ६३ ॥

जो कर्मेश नीचका अष्टमघरमें हो पापग्रह कर्ममें स्थित हो तो मनुष्य राजा हो तो भी उसका राज्य हरण हो जाय उस वर्षमें किंचित भी सुख न हो ॥ ६३ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रंध्राधिनाथो यदि कर्मसंस्थःकर्माधिनाथो यदि मृत्युभावे ॥ क्रूरैश्च युक्तः कुरुते स वर्षे नृपाद्भयं चार्थविनाशनं च ॥ ६४ ॥

अष्टमेश यदि कर्मस्थानमें स्थित हो कर्मेश यदि मृत्युभावमें स्थित हो और क्रूरग्रहोंसे युक्त हो तो राजासे भय और अर्थका नाश हो ॥ ६४ ॥

यत्स्थानगो जन्मनि रात्रिनाथःसराशिलग्नं यदि पापयुक्ते ॥ तदा च वर्षे खलु मातृनाशं शरीरकष्टं प्रवदंति संतः ॥ ६५ ॥

जिस स्थानमें जन्मेश और रात्रिपति हो उसराशिमें यदि पापग्रह हो तो उसवर्षमें माताका नाश और शरीर कष्ट हो ऐसा सन्त कहतेहैं ॥ ६५ ॥

पापान्विते सौम्ययुतेब्दनाथे षष्ठस्थिते वा विवरोदये च ॥ एवंविधेन्दौ रिपुरंध्रसंस्थे स्यान्मृत्युदः श्लेष्मविकारकृच्च ॥ ६६ ॥

जो वर्षपति पापग्रह और सौम्य ग्रहोंसे युक्त हो, छठे स्थानमें स्थित हो वा अष्टम वा तनु (उदय) हो और चन्द्रमा छठे और अष्टमस्थानमें स्थित हो तो मृत्यु करनेवाला तथा कफविकार करनेवाला है॥६६॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इलात्मजे मंदयुते कलत्रे सूर्ये धनस्थेव्ययगे शशांके ॥ तदा नराणां धनधान्यनाशं हर्म्यं च वह्निज्वलितं स वर्षे ॥ ६७॥

इलापुत्र (भौम) मंद (शनि) के साथ कलत्र७ स्थानमें हो सूर्य धनमें स्थित हो चन्द्रमा बारहवें घरमें स्थित हो तो मनुष्योंका धनधान्य नाश हो तथा स्थानमें अग्नि लगै ॥ ६७ ॥

शनैश्चरे भौमपदस्थिते चेत्पापैश्च युक्ते क्षितिसप्तमस्थे ॥ तदा कलत्रस्य करोति नाशं धनस्य हानिं सततं च मार्गात्॥६८॥

जो शनैश्चर मंगलके स्थानमें हो और मंगल सप्तम स्थानमें पापग्रहसे युक्त हो तो कलत्रनाश और धनकीभी हानि हो मार्गमें व्यय हो ॥ ६८ ॥

सप्तमे च यदा पापाश्चाष्टमे शुक्रशीतगू ॥ तदा वर्षे भवेन्मृत्युर्धातुरोगान्न संशयः ६९॥

जो सप्तमस्थानमें पापग्रह हो अष्टममें शुक्र और चन्द्रमा हो तो उस वर्षमें रोगसे मृत्यु हो इसमें सन्देह नहीं ॥ ६९ ॥

षष्ठाष्टमे च लग्नेशो रंध्रस्थो भौमचंद्रमाः ॥ तदा वर्षेविषान्मृत्युरथवा व्याघ्रदारणात्७०॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लग्नेश छठे आठवें मंगल और चन्द्रमा रंध्रस्थानमें स्थित हो तो उस वर्षमें विष अथवा व्याघ्रके विदारणसे मृत्यु हो ॥ ७० ॥

कर्मेशो चास्तगो रन्ध्रे षष्ठस्थे शनिचंद्रमाः। तदा वर्षे नृपान्मृत्युस्तथा चोर्द्धनिपातनात् ॥ ७१ ॥

जो कर्मेश रन्ध्रस्थानमें प्राप्त होकर अस्तहो गयाहो शनि चंद्रमा छठे स्थानमें होतो उसवर्षमें राजासे मृत्यु हो अथवा ऊपरसे गिरै ॥ ७१ ॥

मदननिधनबंधुः पापशत्रुस्थितश्चेज्जनन-समयलग्नाद्रिष्फहान्देष्टहस्थे॥ खलु गगनतनुस्थे युक्तदृष्टेरविष्टं जनपतिशुभदृष्टेरिष्टकष्टाल्पनास्यात् ॥ ७२ ॥

यदि चंद्रमा पापग्रहके सहित शत्रुस्थानमें स्थितहो और जन्मलग्नसे द्वादशपति वर्षमें अष्टमहो दशम स्थानपति तनुस्थानमें स्थितहो सूर्यकी दृष्टि होतो वा शुभ ग्रहकी दृष्टिहो तो शुभ होताहै अरिष्ट कष्ट नहीं होता ७२

आपोक्लिमस्था यदि तुर्यसंस्थाः सर्वे ग्रहाः पापशुभा भवंति ॥ तदा भवेद्योग सइंदुवारं कुर्वंति दुःखं विविधप्रकारैः ॥ ७३ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि तीसरे छठे बारहवें नववेंस्वामी चौथे घरमें हो तो सब पापग्रह शुभ फल देनेवाले हो जाते हैं । यदि इन्दुवार योगहो तो अनेक प्रकारका दुःख और कष्ट होते हैं ॥ ७३ ॥

रंध्राधिपे केंद्रगते सवीर्ये लग्नाधिपो वा यदि मृत्युभावे ॥ षष्ठे शनिश्चन्द्रयुते सवर्षे करोति कष्टं विविधप्रकारैः ॥ ७४ ॥

जो रन्ध्रेश बली केन्द्रमें प्राप्तहो और लग्नका स्वामी मृत्युस्थानमें हो छठे चन्द्रमा शनियुक्तहो तो अनेक प्रकारसे कष्ट करतेहैं ॥ ७४ ॥

लग्नस्थिते रंध्रपतौ सपापे लग्नाधिपे चंद्रयुतेऽष्टमस्थे ॥ तदा हि वर्षे तनुसंक्षयं स्याच्छोकादिरोगेण वदंति संतः ॥ ७५ ॥

जो लग्नमें पापग्रहके साथ रन्ध्रेश स्थितहो और लग्नपति चन्द्रमाके सहित अष्टमस्थानमें स्थितहो तो उस वर्षमें रोग शोकादिसे शरीरक्षय होय ऐसा सन्त कहतेहैं ॥ ७५ ॥

लग्नाधिपे शुक्र यदाष्टमस्थे क्रूरैश्च युक्तेप्यथवीक्षिते च ॥ लग्ने च भौमेंदुयुते सवर्षे करोत्यरिष्टं कथितं नृपार्तात् ॥ ७६ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो लग्नपति शुक्र अष्टम स्थानमें स्थितहो और क्रूरग्रहोंसे युक्तहो वा उस क्रूरग्रहोंकी दृष्टिहो लग्नमें मंगलहो तो तृषा आदि अरिष्ट हों ॥ ७६ ॥

जन्मलग्नाब्दलग्नेशो मुंथेशो चास्तगो यदा
तस्मिन्वर्षे ध्रुवं कष्टं क्रूरयुक्तेक्षिते तथा॥७७॥

जन्मलग्नेश वर्षलग्नेश और मुंथेश यदि सप्तम होगये हों तथा उनपर क्रूरग्रहों की दृष्टि हो तो उस वर्षमें अवश्य कष्ट हो ॥ ७७ ॥

द्रविणभाग्यपवक्रविधौ सुते तनुपतिर्विब-
लोपि धनाश्रितः॥तदपियोगभवो बहुदोष-
भाङ्मरणतुल्यविनाशमहाधनम् ॥ ७८ ॥

धनेश भाग्येश बुध और लग्नेश यह निर्बल होकर यदि धनस्थानमें स्थितहो तो यह बहुत दोषकरनेवाला योग है यह मरणतुल्य करताहै तथा धनका नाशक है ॥ ७८ ॥

लग्नाधिनाथो यदि मृत्युभावे भौमेक्षिते
तस्य च भाग्यसंस्थे ॥ अस्तंगते वाभृगुजे
बुधेवा शस्त्राभिघातं बहुधा च कष्टम्॥७९॥

लग्नेश अष्टम हो और भाग्यस्थानमें स्थित मंगलसे देखा हो अथवा शुक्र वा बुधके सहित सप्तममें हो तो शस्त्रका आघात और शरीरमें कष्टहो ॥ ७९ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुरारिपूज्ये यदि नीचसंस्थे सुरैश्च पूज्यः परभागवृद्धिः॥ स्वप्नेति सौख्यं न हि तत्र वर्षे वृथा फलं हायनके तदानीम्॥ ८० ॥

यदि शुक्र नीचस्थानमें स्थितहो और गुरु परभाग उच्चमें स्थितहो तो उसवर्ष स्वप्नमें भी सुख नहो सम्पूर्ण वर्षका फल वृथा होजाताहै ॥ ८० ॥

भौमग्रहे सप्तमराशिसंस्थे भावेऽष्टमे देवगुरुश्च याते ॥ शुक्राष्टमे चंद्रयुते च वर्षे खल्लासरं योगमुशंति कष्टम् ॥ ८१ ॥

यदि मंगल सप्तमराशिमें स्थितहो, देवगुरु अष्टमभावमें हो और अष्टम चन्द्रमाके सहित हो तो यह खल्लासर योग कष्टका देनेवालाहै ॥ ८१ ॥

गुरौ यदा चाष्टमगे सचंद्रे सौरी सयुक्ताभवतीह मुंथा ॥ सूर्ये बुधे यत्र यदा भवंति तद्वर्षगे याति यमालयं च ॥ ८२ ॥

जो बृहस्पति चन्द्रमाके सहित अष्टमस्थानमें स्थित और शनिके सहित मुंथा हो तो उस वर्षमें प्राणीकी मृत्यु हो ॥ ८२ ॥

लग्नाधिनाथो यदि नीचसंस्थो मुंथाधिनाथोरविमंडलस्थः ॥ तस्मिन् हि वर्षे कुरुते नराणां करोत्यरिष्टान्युदरे व्यथा च॥८३॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

. CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो लग्नका अधिपति नीचस्थानमें हो मुंथापति सूर्य-मंडलमें हो तो उसवर्षमें अरिष्ट और पेटमें व्यथाहो८३

केतुश्च युक्ते यदि शीतरश्मिमृत्युवालये दृष्टिसमुद्भवो वा ॥ तदाहि वर्षे कुरुते नरा-णां यमालये गच्छति सुंदरीणाम् ॥ ८४ ॥

जो चंद्रमा केतुके साथ हो और अष्टममें हो वा अष्टम स्थानको देखता हो तो उस वर्ष मनुष्यका मरण हो स्त्रीका वियोग हो ॥ ८४ ॥

धने व्यये पाप यदा च खेटा मृत्युस्थिते पापयुते च सौम्ये ॥ तदा हि वर्षे कुरुते नराणां वित्तक्षयं धर्मक्षयोपवादः॥ ८५ ॥

जो धनस्थानमें बारहवें स्थानमें पापग्रह हो, अथवा पाप ग्रहके सहित सौम्यग्रह अष्टममें स्थित हो तो उस वर्षमें मनुष्योंका वित्तक्षय धर्मक्षय और अपवाद हो८५

सूर्यो यदा सप्तमगे च सौरी रंध्राधिपत्या यदि सौरियुक्तः॥तदा हि वर्षे सकलार्थनाशं तमो यथा भास्करदर्शनेन ॥ ८६ ॥

जो सूर्य सप्तमहो और शनि उसके साथ हो,वा रन्ध्रेश शनियुक्त हो तो उस वर्षमें सम्पूर्ण अर्थका नाश इस प्रकारहो जैसे सूर्यके दर्शनसे अंधकार नष्ट होजाताहै८६

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लग्नाधिनाथो यदि कर्मनाथएकोयदिस्या-
त्किल यत्र वर्षे ॥ हरंत्यरिष्टं सकलार्थला-
भंनृपोत्तमैर्मित्रयशोदयं च ॥ ८७ ॥

जिसवर्षमें लग्नेश कर्मेश एक हो तो सम्पूर्ण अरिष्ट हरतेहैं राजासे लाभ मित्रोंसे यशकी प्राप्ति होती है ८७

विनाशनाथो यदि कंटके स्याद्वपुःपति-
र्द्वादशगोरिगो वा ॥ चन्द्रे यदा पापयुते-
ष्टमस्थे करोति नूनं निधनं हि वर्षे ॥८८॥

जो अष्टमेश यदि केन्द्रमें हो लग्नेश बारहवें वा छठे हो चन्द्रमा पापयुक्त अष्टममें हो तो उस वर्षमें निधन होता है ॥ ८८ ॥

लग्नाधिपे नीचगतेथवास्तेमृत्युस्थिते क्रूर-
युते च दृष्टे ॥ उद्वेगचिंतात्वसुखं भयं च
निरुद्यमानं खलु रिष्टतुल्यम् ॥ ८९ ॥

जो लग्नेश नीच स्थानमें प्राप्त होकर सप्तम हो जाय तथा मृत्युस्थानमें स्थितक्रूरयुक्त चन्द्रमा हो तो उद्वेग चिन्ता असुख भय निरुद्यम और अरिष्ट बराबर हो८९

चद्रांर्कयुक्ते निधने च भौमे कलत्रगे धम-
गतेऽर्कपुत्रे ॥ तदा च वर्षे नवमे च मासे
करोति कष्टं प्रवदंति संतः ॥ ९० ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो चन्द्रमा सूर्यसेयुक्त मंगल निधनस्थानमें प्राप्तहो और शनि सातवें अथवा धर्मस्थानमें प्राप्तहो तो उस वर्षके नौवें महीनेमें अरिष्ट हो ऐसा सन्तकहतेहैं॥९०॥

सुखस्थिते भूमिसुतेस्तसंस्थे विलोमगे सूर्ययुते च दृष्टे॥लग्नाधिपे छिद्रगते च वर्षे घातादिपातेन करोत्यरिष्टम् ॥ ९१ ॥

जो मंगल चौथे स्थानमें स्थित हो अथवा सप्तम होजाय तथा विलोमस्थानमें प्राप्त होकर सूर्यसे संयुक्त हो वा सूर्यकी दृष्टि हो और लग्नेश छिद्रमें प्राप्त हो तो घातादि पातसे अरिष्ट हो ॥ ९१ ॥

देवेज्ये खलु चास्तगे हिमरुचौसूर्यस्य राशिस्थिते दृष्टे भूमिसुतेन ताजिकमते सौख्यार्थनाशं ततः ॥ कासश्वासकरं तथा ज्वलनकृत्कष्टप्रदं दारुणं मित्रैर्वा कलहं करोति सततं स्त्रीपुत्रकष्टप्रदम्॥९२॥

देवगुरु निश्चयकरके यदि सप्तममें प्राप्त हो और चन्द्रमा सूर्यराशिपर स्थित हो और मंगल उसको देखता हो तो सुख और अर्थका नाश हो कास श्वास करनेवाला, विशेष दाहकारक दारुण कष्टकरनेवाला मित्रसे क्लेश और स्त्री पुत्रको कष्ट करानेवाला है ९२

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कन्यास्थिते नीचग्रहे गुरुश्च प्रसूतिकाले खलु शत्रुभावे ॥ वर्षे यदा नीचस्थिते फलं च करोत्यरिष्टं निजवर्गमुख्यैः ॥ ९३ ॥

जो कन्यामें नीचका गुरु स्थित हो, जन्मकालमें हो या शत्रुके घरमें स्थितहो तो इसवर्षमें नीचका स्थित होकर अपने वर्गसे अरिष्ट करता है ॥ ९३ ॥

शरीरकार्श्यं ह्यनलाद्भयं च विरेचनादिं श्वासकासादिबाधा ॥ सतंद्रा तथा घातपातादिकष्टं यदा भूसुते चंद्रयुक्तेऽष्टमस्थे ॥९४॥

शरीरमें कृशता अग्नि आदिसे भय विरेचन आदिसे कष्ट श्वासकासादिकी बाधा और तंद्रा घातपातादिका कष्ट हो यदि मंगल चन्द्रमाके सहित अष्टमस्थानमें स्थित हो तो यह फलहो ॥ ९४ ॥

छिद्राधिपे केन्द्रगते त्रिकोणे करोति कष्टं विषबंधनादि ॥ शूलं विरेकावमनं स्वदाहं प्रलापतंद्रांवितनोति नूनम् ॥ ९५ ॥

जो रंध्रपति केन्द्र वा त्रिकोणमें प्राप्तहो तो कष्ट विष बंधनादि कष्ट करता है शूल विरेक वमन दाह श्वास प्रलाप तन्द्रा निश्चय करके करता है ॥ ९५ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शरीरकार्श्यं श्वासकासादिकष्टं ज्वरार्त्तिप्रदं मारुताद्गात्रभंगम्॥ सकृद्बंधनं चांगनानां च कष्टं यदा लग्नगे चंद्रयुक्तेऽर्कपुत्रे ॥९६॥

जो लग्नमें चन्द्रमाके सहित शनिहो तो शरीर कृश कासश्वासादिका कष्ट ज्वर वातकोप वायुसे गात्रभंग बंधन स्त्रीजनोंको कष्ट हो इसमें सन्देह नहीं ॥ ९६ ॥

शूलं विरेकावमनादिकष्टं दाहं तथा शीतलकादिरोगम्॥ घातं तथा धातुक्षयं नराणामारेऽर्कजे चंद्रयुक्तेऽष्टमस्थे ॥ ९७ ॥

जो चन्द्रमा और शनि अष्टमस्थानमें स्थितहो तो शूल विरेचन वमनादिका कष्ट दाह और शीतलकादि रोग हो घात धातुक्षय आदि अनेक रोग होतेहैं॥९७॥

लग्नाधिपे सौरियुतेऽष्टमस्थे सुखस्थिते वा यदि वक्रयाते॥ पापैर्विलोक्ये खलु दुष्टपातात्करोति कष्टं विविधप्रकारैः ॥ ९८ ॥

जो लग्नेश शनियुक्त अष्टमस्थानमें स्थित हो, सुखस्थानमें स्थित वक्री हुआ हो पापग्रह देखते हों तो अनेक प्रकारसे दुष्टोंसे कष्ट हो ॥ ९८ ॥

त्रिराशिमुंथा निशि जन्मनाथश्चास्तं गतो-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ब्दांगपतौ स्वनीचे ॥ तदा च वर्षे सुरर-
क्षितोऽपि प्राप्नोति नूनं निधनंमनुष्यः९९॥

त्रिराशीश मुंथेश जन्मलग्नेश यह अस्त सप्तमको प्राप्तहो वर्षपति नीचका हो तो यदि देवताभी रक्षाकरै तथापि मनुष्य उस वर्षमें निधनको प्राप्त होतेहैं ॥९९॥

छिद्राधिपे मृत्युगते बलिष्ठे लग्नाधिपे
चास्तगते हि वर्षे॥शूलं विरेकं वमनं च दाहं
प्रलापतंद्रादि करोति कष्टम् ॥ १०० ॥

जो रन्ध्रेश मृत्यु भावमें प्राप्त बलिष्ठ हो और लग्नपति सप्तममें प्राप्त हुआ हो तो शूल दस्त वमन दाह प्रलाप तंद्राका कष्ट उस वर्षमें होता है ॥ १०० ॥

लग्ने च राहुस्सुतगेऽर्कपुत्रे लग्नाधिप चंद्र-
युतेऽष्टमस्थे ॥ तदा च वर्षे पवनादिपीडा
गुल्मादिरोगेन भवेच्च मृत्युः ॥ १०१ ॥

जो लग्नमें राहु सुतस्थानमें शनि लग्नेश चन्द्रमाके सहित अष्टम स्थानमें स्थित हो तो उसवर्षमें पवनादिपीडा और गुल्मादि रोगसे मृत्यु हो ॥ १०१ ॥

चतुर्थे भवने पापाश्चष्टम व्ययगे तथा ॥
आमवातकफश्वासशरीरेकृशमादिशेत् १०२

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो पापग्रह चौथे आठवें बारहवें हो तो आमवात कफ श्वाससे शरीरमें कृशता हो ॥ १०२ ॥

अष्टमस्थे यदा भौमे षष्ठे भवति चन्द्रमाः॥
वर्षे तदोदयेशत्रुः शत्रुतःपातघातकम् १०३॥

जो मंगल अष्टम हो छठे चन्द्रमा हो तो उस वर्षमें शत्रुका उदय और शत्रुसे घातपातादि हो ॥ १०३ ॥

लग्नेशे यदि नीचस्थे लग्ने नीचग्रहे युते ॥
तदा शरीरे पीडास्यादथवा स्त्रीसुते तथा १०४

लग्नेश नीचका लग्नमें स्थित नीचके ग्रहसे युक्त हो तो शरीरमें अथवा स्त्रीपुत्रमें पीडा हो ॥ १०४ ॥

निधनलग्नमदान्त्यविधुर्यदि कुजशनिर्युग-
वर्गगतः सितः॥विविधशस्त्रभयं ज्वरपीडनं
तनुक्षयं कुरुते कफमारुतः ॥ १०५ ॥

यदि अष्टम चन्द्रमा हो वा मंगल शनिके सहित हो चन्द्र वर्गमें हो तो अनेक शस्त्रसे ज्वर पीडा वात कफसे शरीरको क्षय करता है ॥ १०५ ॥

लग्नाधिनाथोऽष्टमभावनाथ एका यदि
स्यात्किल यत्र वर्षे॥तदाहि वर्षे प्रकरोति
कष्टं विषाग्निपीडारुधिरप्रकोपम् ॥ १०६॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो लग्नेश अष्टमेश एकही हो तो उस वर्षमें विष अग्नि पीडा और रुधिरका कोप करते हैं ॥ १०६ ॥

भ्रातुर्निवेशो यदि शत्रुभावे सौम्यग्रहैर्युक्तनिरीक्षिते च ॥ तदा च वर्षं प्रकरोति वैरं मित्रात्मवर्गैः कलहो नितान्तम् ॥ १०७ ॥

जो तीसरे स्थानका अधिपति शत्रुभावमें हो सौम्यग्रहोंसे युक्त हो अथवा उसको सौम्यग्रह देखते हों तो उस वर्षमें मित्र तथा आत्मीयजनोंसे क्लेश होता है और कलह अधिक होता है ॥ १०७ ॥

रंध्राधिनाथो यदि लग्नवर्तीतनुक्षयं वातकफोद्भवाच्च ॥ गुह्येन्द्रिये पादमुखादिपीडा कंठावरोधं कथितं मुनींद्रैः ॥ १०८ ॥

जो रन्ध्रेश लग्नमें हो तो वात और कफसे शरीरक्षय होता है तथा गुह्येन्द्रिय पाद मुखादिमें पीडा कंठका अवरोध होय है ऐसा मुनिजन कहते हैं ॥ १०८ ॥

सहजगे क्षितिनंदनवर्षपे भवति केतुयुते बहुकष्टदा ॥ सहजवैरकृतं च रिपूद्भयं विविधवायुभयं कथितं नरम् ॥ १०९ ॥

जो वर्षपति और मंगल सहजस्थानमें प्राप्त हो और केतुके सहित हो तो बहुत कष्टके देनेवाले हैं स्वाभाविक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वैरकरानेवाले शत्रु उदय करानेवाले तथा अनेक प्रकारसे वातका भय करनेवाले हैं॥ १०९॥

नवांशवर्षाधिपतिर्नवांशे षष्ठेष्टमे मृत्युगते नराणाम्॥ बन्धोःशरीरे समुपैति कष्टं क्लेशं विवादं कुरुते नराणाम्॥ ११०॥

जो नवांशवर्षका अधिपति नवांशमें हो अथवा छठे आठवें स्थितहो तो बंधुके शरीरमें कष्ट क्लेश और विवाद भी करने वाला है॥ ११०॥

लग्नाधिनाथो यदिपंचमस्थे सौम्यैश्चयुक्तो यदि वीक्षितोवा॥हरंत्यरिष्टं सकलं नराणां तथापि चास्तं यदि नीचखेटाः॥ १११॥

जो लग्नेश पंचमस्थानमें हो सौम्यग्रहोंसे युक्तहो वा जिसको सौम्यग्रह देखते हों तो मनुष्योंका सम्पूर्ण अरिष्ट दूरहो जो सप्तम नीचके ग्रह पडेहों तो भी यह फलहो॥ १११॥

त्रैलोक्यताजिके।

लाभाधिपे बलयुते धनगे च चन्द्रे जन्माधिपेन सहितेन निरीक्षितेन॥ रन्ध्राधिपेप्यबलगे यदि तत्र वर्षे चान्यत्कृतं हरति रिष्टगुणं सवर्षे॥ ११२॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो लाभेश बलीहो चन्द्रमा धन स्थानमें हो तथा जन्मपतिके सहित हो वा देखताहो और रन्ध्रपति निर्बल हो तो उस वर्षमें अन्यग्रहोंका किया हुआ सब अरिष्ट दूर होता है ॥ ११२ ॥

ताजिकलतायाम् ।

नीचास्थितोजन्मनियद्ग्रहश्चतद्वर्षगेभवति चाष्टमयत्रभावे ॥ सौख्यप्रदं धनप्रदं बहुलं विलासं मित्रागमं सकलरिष्टहरंतिवर्षे ११३॥

जो ग्रह जन्ममें नीचकी स्थित हो वही ग्रहवर्षमें अष्टम भावमें प्राप्तहो तो सुख देनेवाला धन देनेवाला अनेक सुख मित्रकी प्राप्ति करनेवाला तथा सब अरिष्ट हरता है॥ ११३ ॥

वामनताजिके ।

लग्नाधिनाथे यदिकेन्द्रगो वाप्युच्चर्क्षगो वा यदिमित्रदृष्टः ॥ राजाधिराजं किल योग-जातं धनप्रदं बाहुबलप्रतापम् ॥ ११४ ॥

यदि लग्नका स्वामी केंद्रमें होय अथवा उच्चग्रह होकर केंद्रमें स्थित होय और यदि लग्नस्वामी या उच्चग्रह होकर मित्र देखता हो तो इस योगसे राजाको सार्वभौमपद प्राप्त होवैं अथवा साधारण मनुष्य बडा धनवान् और अपने भुजबलसे प्रतापवान् होगा ॥११४॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

समुच्चयताजिके।

रन्ध्रालयस्था यदि पंचखेटा ह्यष्टाधिकं वा यदि नीचयुक्ताः॥ तदा च वर्षं प्रकरोति कष्टं वज्राहतं वा प्रवदन्ति सन्तः॥११५॥

जो रन्ध्रस्थानमें पाँच ग्रह स्थितहों अथवा छःसे अधिक नीच युक्तहो तो उस वर्षमें वज्रसे हत होनेका कष्टहो ऐसा संत महात्मा कहतेहैं॥ ११५॥

ताजिकलतायाम्।

लग्नाधिपे केन्द्रगते बलिष्ठे सौम्ये क्षिते वा सहिते च वर्षे॥धनं च लाभं खलु रिष्टनाशं गुप्तस्य सौख्यं कथितं मुनींद्रैः॥ ११६॥

जोलग्नपतिबलिष्ठ होकर केन्द्रमें प्राप्त हुआहो, सौम्य-ग्रह उसको देखताहो, वा सौम्य युक्तहो तो धन लाभ अरिष्टनाश गुप्त सुखहो ऐसा सन्त कहते हैं॥ ११६॥

वर्षाधिपे शशिसुते यदि मृत्युभावे सूर्यात्मजेवनिसुते द्युगते सपापे॥ चन्द्रेक्षिते वा मरणं नराणां कंठादिरोगवमनं प्रवदन्ति सन्तः॥ ११७॥

जो वर्षेश और बुध अष्टमहो तथा शनि मंगल पाप-ग्रहसहित सप्तमस्थानमें प्राप्तहो चन्द्रमाकी दृष्टिहो तो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मनुष्यका मरणहो कंठादिरोग और वमनहो ऐसा सन्त कहतेहैं ॥ ११७ ॥

ताजिकसमुच्चये ।

यदींथिहेशो निजभाग्यवर्ती स्वोच्चंगतोमित्र-शुभैश्च दृष्टः ॥ ददाति लक्ष्मीं गजहेमर-त्नप्रवालकादिं खल्वरिष्टनाशम् ॥ ११८ ॥

जो मुंथापति भाग्यस्थानमें हो उच्चस्थानमें प्राप्तहो मित्रग्रह तथा शुभग्रहोंकी दृष्टिहो तो लक्ष्मी हाथी सुवर्ण रत्न प्रवालकादिकी प्राप्ति और अरिष्टका नाश होता है ॥ ११८ ॥

तनो यदा रंध्रगतेर्कपुत्रे वर्षेशराशौ यदि मृत्युभावे ॥ सौरेण युक्तो कुरुते नराणां भुजंगमस्पर्शनतश्च कष्टम् ॥ ११९ ॥

जो सूर्यपुत्र शनि तनुस्थानको अथवा रंध्रस्थानमें प्राप्तहो और वर्षेशभी मृत्युस्थानको प्राप्तहोकर शनिके साथ हो तो मनुष्यको सर्पस्पर्शका कष्टहो ॥ ११९ ॥

सुखाधिपे सौम्यगते बलिष्ठे लग्नाधिपे लाभ-पतिप्रयुक्ते ॥ तदा च वर्षे गजवाजिलाभं शरीरसौख्यं विविधप्रकारैः ॥ १२० ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो सुखेश सौम्यग्रहके साथ बलिष्ठहो और लग्नेश लाभेश एकस्थानमें प्राप्त हों तो वर्षमें हाथी घोड़ोंके लाभ ओर शरीरमें अनेक प्रकारका सुख हो ॥१२०॥

मंदो यदा चन्द्रपदे मृगांकश्चेन्नक्रराशौ खलु पापयुक्ते ॥ लग्नाधिपे मृत्युगते सवर्षे करोति कष्टं हि जलोदरं च ॥ १२१ ॥

जो शनि चन्द्रमाके स्थानमें हो और चन्द्रमा मकरराशिमें पापयुक्त हो और लग्नेश अष्टम हो तो कष्ट और जलोदर करता है ॥ १२१ ॥

लाभाधिपे लग्नगतेब्दपेशो लाभस्थिते वा यदि सौम्ययुक्ते ॥ उभौ नभस्थे कुरुते हि वर्षे हरत्यरिष्टं कथितं मुनीन्द्रैः ॥१२२॥

जो लाभेश लग्नमें प्राप्त हो वर्षेश सौम्यग्रहके सहित लाभमें स्थितहो वा दोनों दशमभावमें स्थित हों तो अरिष्ट हरते हैं ऐसा मुनिजन कहते हैं ॥ १२२ ॥

सकलकेंद्रगताश्च शुभैर्युता अरिगता व्ययभावविवर्जिताः॥धनमथो बहुलं कुरुते सुखं प्रतिदिनं रमणीसुखमेव च ॥१२३॥

जो शुभग्रह शुभके साथ केन्द्रमें प्राप्त हुएहों और छठेमें प्राप्तहुए व्ययभावसे वर्जितहों तो धन और बहुत

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुखके करनेवाले हैं, तथा अनेक सुख और स्त्री विलासके सुखसे समय व्यतीत कराते हैं ॥ १२३ ॥

सहजभाव ।

सहजभावपतिःसहजस्थितो बुधगुरू यदि शुक्रसमन्वितौ ॥ सकलरिष्टहरं ग्रहकोविदं यदि तथास्तगृहं च जयं कुरु ॥ १२४ ॥

जो सहजस्थानमें बुध गुरु शुक्रके साथ स्थितहों तो ग्रहोंसे हुए सम्पूर्ण अरिष्टको दूर करते हैं यदि सप्तममें हों तो भी जयकारक हैं ॥ १२४ ॥

जन्मन्यब्दे तूर्यभावे सपापे दग्धेऽरिष्टं चिन्तनीयं हि पुत्रैः॥ तद्वत्सूनौ तुर्यनाथान्वितं भं वर्षे मंदारान्वितं स्यात्फलं तत् १२५॥

जो वर्षलग्नमें वा जन्मलग्नमें चौथे भावमें पापग्रहहो तो उससमय पुत्रोंको अरिष्ट हो इसीप्रकार पुत्रस्थानचौथे स्थानके स्वामीके साथ हो तो वर्षमें मंदफल हो॥ १२५॥

द्यूनस्थिते सप्तमभाववर्जे खलैर्हतः स्त्रीतनुजप्रवादः॥ शनैश्चरो वा यदि पञ्चमस्थस्तदापवादो विषयान्तरे स्यात् ॥ १२६ ॥

जो ग्रह सप्तमस्थानमें स्थित सप्तमभावसे वर्जित हो क्रूरग्रह होय तौ स्त्रीपुत्रोंमें आवाद हो और शनि पांचवाँ हो तो क्लेश अपवादादिकी प्राप्ति हो ॥ १२६ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि सुखाधिपतिःखलु केंद्रगतःप्रसवलग्नप-
तिर्हिबुकाश्रितः॥ धनसुखं विविधं क्षितितो
लभेत्सुतसुखं यदि सौम्यसमन्वितः॥१२७॥

जो सुखेश केन्द्रस्थानमें हो जन्मलग्नपति हिबुक (चौथे) स्थानमें हो तो राजासे अनेक प्रकारका धन और सुख प्राप्तहो और यदि उपरोक्त ग्रह चन्द्रमाके सहित हो तो पुत्रकाभी सुखहो ॥ १२७ ॥

पंचमस्थो यदा शुक्रो भौमयुक्तो निरीक्षितः॥
तदावर्षेविजानीयाद्भर्मेपुत्रसमुद्भवः॥ १२८ ॥

जो शुक्र पंचमस्थानमें मंगलके साथ निरीक्षणकिया गया होतो उस वर्षमें पुत्रकी प्राप्ति जाननी ॥ १२८ ॥

सुते सुखायान्त्यकलत्रनाथोब्दे छिद्रगा
क्रूरयुतेक्षिते च ॥ मृत्युप्रदोऽथार्कजइन्दुदृष्टो
व्ययारिगे मृत्युप्रदत्रिदोषात् ॥ १२९ ॥

जो सातवें स्थानका अधिपति सुखस्थान वा पञ्चममें हो अष्टममें क्रूरग्रहोंके साथ हो या क्रूरग्रहोंकी दृष्टि हो तो मृत्युयोग है अथवा शनि चन्द्रमा अष्टम छठे बारहवें हो तो त्रिदोषसे मृत्युहो ॥ १२९ ॥

व्ययालये वा मदनालये वा खलेषु बुद्ध्या-
लयगे हिमांशौ ॥ कलत्रहीनो मनुजस्थनूजै-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विवर्जितस्यादिति वेदितव्यम् ॥ १३० ॥

जो बारहवें स्थानमें सप्तमस्थानमें वा बुद्धिके स्थान पंचममें क्रूर ग्रहोंके साथ चन्द्रमा हो वा मंगल हो तो कलत्रका वियोग हो ऐसा जानना चाहिये ॥ १३० ॥

सुखपतिस्सबलश्च सुखानुगो बुधसुरेज्य-सुतैर्युतवीक्षितः॥ स विदधाति सुखं विपुलं धनं हरति रिष्टगणं कथित बुधैः ॥ १३१ ॥

जो सुखेश बलिष्ठ और सुख स्थानमें प्राप्तहो बुध गुरुके साथ देखा गया हो तो सुख और धन बहुतसा प्राप्तहो और संपूर्ण अरिष्ट दूर हो यह महात्माओंका कथन है ॥ १३१ ॥

दैत्येज्ये स्वपदे विवाहजसुखं कष्टं कुजे योषितां द्रव्यस्थो रविजः करोतिकलहंस्वस्थो रविःक्लेशकृत्॥सौम्याःसप्तमगाबलेनसहिताः कुर्युस्सुखं योषितां दुष्टाःस्वल्पसुखं शशांकसहिताः स्त्रीतो हि वश्यं नृणाम् ॥१३२॥

जो शुक्र अपने स्थानमें स्थितहो तो विवाहका सुख मंगल हो स्त्रीका कष्ट, धनस्थानमें शनि हो तो क्लेश और रवि हो तो क्लेशकारी है; जो सौम्यग्रह सप्तमस्थानमें बलवान हो तो स्त्रियोंका सुख हो जो चन्द्रमाके

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

साथ क्रूरग्रह हो तो थोडा सुख तथा मनुष्य स्त्रीके वशीभूत हो ॥ १३२ ॥

अब्दाधिनाथे खगते बलिष्ठे सौम्यान्विते स्यान्नृपतोर्थलाभम्॥शरीरसौख्यं मनसि प्रहर्षं रथादिलाभं भवतीह वर्षे ॥ १३३ ॥

जो वर्षेश दशमस्थानमें प्राप्त और बलवान् हो तथा सौम्य ग्रहोंसे युक्त हो तो राजासे अर्थ लाभ हो शरीरमें सुख मनमें प्रसन्नता तथा इस वर्षमें रथादिका लाभ हो ॥ १३३ ॥

लग्नाच्चाष्टमगे कुजे विधुयुते स्यान्मृत्युकृच्छस्त्रतो मन्दारौ यदि चाष्टगौ हिमरुचिर्वा लग्नतोऽरिष्टकृत्॥ मुंथामृत्युगता खलैर्यदि युता नो जीवदृष्ट्यार्तिदा सूनौ चाष्टमगा तथाखलखगैर्युक्तेक्षिता मृत्युकृत् ॥१३४॥

जो चंद्रमाके सहित मंगल अष्टम हो तो शस्त्रसेमृत्यु हो शत्रुके घरमें शनि हो वा लग्नसे चन्द्रमा अष्टम हो तो अरिष्ट करनेवाला है. जो मुंथा क्रूर ग्रहोंके साथ मृत्युस्थानमें प्राप्त हो बृहस्पति न हो तो दृष्टिको कष्ट होता है तथा सुतस्थान वा अष्टममें प्राप्त हो खल ग्रहोंसे युक्त हो वा देखते हों तो मृत्युकारक है ॥ १३४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मंदे यदा मंदपदेष्टमस्थे तुर्यस्थिते पापयुते गृहे च ॥ पापेन युक्ते प्रकरोत्यरिष्टं मृत्यादिघातेन वदंति सन्तः ॥ १३५ ॥

जो शनि मंदपद अष्टम स्थानमें हो चौथे स्थानमें पापग्रहोंसे युक्त हो तो अरिष्ट और मृत्यु आदिका घात हो यह सन्त कहते हैं ॥ १३५ ॥

सहोत्थपे बंधुगते त्रिकेन्द्रे सौम्येक्षिते चाग्निकृतंहिवर्षे ॥ पापास्त्रिषष्ठैकगताश्चवर्षे कुर्वंति सौख्यं निजबंधुवर्गात् ॥ १३६ ॥

सहजपतिके सहज स्थानमें प्राप्त होनेमें तथा त्रिकोण केन्द्रमें प्राप्त हो शुभ ग्रहोंकी दृष्टि हो तो भी अग्निभय हो और तीसरे छठे पापग्रह हो तो बंधुवर्गसे सुख हो ॥ १३६ ॥

ताजिकसमुच्चये ।

षष्ठाष्टमे वर्षकाण्डे भवतो रविशीतगू॥पापयुक्तौ तदा मृत्युर्गजदोषो न संशयः॥ १३७॥

जो वर्षमें सूर्य और चन्द्रमा छठे वा आठवें हों तथा पापग्रहयुक्त हों तो मृत्यु गजदोषसे हो इसमें संदेह नहीं ॥ १३७ ॥

दशमभावगते यदि भूसुते सुखगते सुरना-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यकसंयुते ॥ तनुगते यदि तुंगरवेर्यदा सकलपार्थिवपूजितविक्रमः ॥ १३८ ॥

यदि मंगल दशमभावको प्राप्तहो बृहस्पति चतुर्थ हो, और तनुस्थानमें उच्चके सूर्य हों तो सब राजा उसके पराक्रमकी बड़ाई करैं ॥ १३८ ॥

यवनताजिके।

सहजभावपती रिपुभावगो रिपुपतिस्सह-जर्क्षपसंयुते ॥ तदिह वर्षगते स्वकबन्धुतो भवति शस्त्रहते शिरसः क्षतिः ॥ १३९ ॥

जो सहजस्थानका अधिपति शत्रुके घरमें प्राप्तहो शत्रुपति सहजस्थान (तृतीय) में प्राप्त हो तो इस वर्षमें भ्रातासे शस्त्रद्वारा शिरमें आघात होगा ॥ १३९ ॥

केंद्रस्थिते देवगुरौ बलिष्ठे सौम्यग्रहे युक्त-विलोकिते वा॥तदा च वर्षे धनधान्यलाभं प्रयात्यरिष्टं त्वरया विनाशम् ॥ १४० ॥

जो गुरु केन्द्रमें स्थित और बलिष्ठहो अथवा उसपर सौम्यग्रहकी दृष्टि होतो उस वर्षमें धनधान्यका लाभ और लग्नका किया अरिष्ट नाशहो ॥ १४० ॥

लाभे तृतीये यदि सैंहिकेयः सौम्यैश्च युक्ते अथवाविलोके॥ तदाच रिष्टं कुरुते विनाशं लग्नोद्भवं वा मुथहाकृतं वा ॥ १४१ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो ग्यारहवें अथवा तीसरे राहुहो सौम्यग्रहसे युक्त हो वा उसको सौम्यग्रह देखता हो तो लग्न वा मुंथाका किया अरिष्ट नष्ट होताहै ॥ १४१ ॥

लग्ने व्ययगते शुक्रे सूर्यभौमसमन्विते ॥
नेत्ररोगंविजानीयात्कथितंहि मुनीश्वरैः १४२

जो शुक्र लग्नमें अथवा बारहवें सूर्य मंगलके साथ हो तो उस वर्षमें नेत्ररोगहो ऐसा मुनिजन कहतेहैं॥१४२॥

मुंथाधिनाथस्सहजेन युक्तः सौम्येन युक्तश्च निरीक्षितश्च॥तदाचवर्षे खलु रिष्टनाशं मदालये सूयनिरीक्षिते च ॥ १४३ ॥

जो मुंथापति सहजस्थानमें युक्तहो और सौम्यग्रहोंसे युक्तहो वा सौम्यग्रहोंकी उसपर दृष्टि हो तो यदि सप्तमस्थानमें सूर्य हो तो अरिष्ट नाशहो ॥ १४३ ॥

हद्देश्वरो हायनलग्ननाथः सप्ताष्टकक्रूरयुतं करोति ॥ मृत्योर्दशायां शुभदृष्टयुक्तः फलं तदार्धं प्रतिमं करोति ॥ १४४ ॥

जो हद्दा (दशाका) स्वामी व वर्षलग्नका स्वामी सातवें आठवें क्रूरग्रहोंके साथहो तो मृत्युवत् कर देताहै और शुभग्रहकी दृष्टिहो तो उसका आधाफल होताहै १४४॥

ककगुरौ सौख्यगते बलिष्ठे सौम्यग्रहेयुक्त-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निरीक्षिते च ॥ लग्नाधिपे लग्नगते सवर्षे सुखासनं योगमुशंति सन्तः ॥ १४५ ॥

जो कर्कके गुरु सुखस्थानमें प्राप्त तथा बलिष्ठ हो तथा सौम्यग्रहसे युक्त हो वा सौम्यग्रह उसको देखताहो और लग्नेश लग्नमें प्राप्तहो तो महात्माओंने यह सुखासन योग कहा है ॥ १४५ ॥

लग्नाधिपे रंध्रगते च भौमे रंध्राधिनाथे व्ययगे रिपुस्थे ॥ करोत्यरिष्टं द्विषतां विवादे भृत्यादिघातेन करोत्यरिष्टम् ॥ १४६ ॥

लग्नेश और मंगल रन्ध्रमें हों रन्ध्रेश बारहवें अथवा छठे हो तो अरिष्ट शत्रुविवाद और भृत्यादिका घात होताहै ॥ १४६ ॥

लग्नाधिपे भवति भौमगते च कर्मे कर्माधिपे भवति केंद्र अथो त्रिकोणे ॥ सौम्येक्षिते प्रकुरुते निजवंशमध्ये तुल्यं नृपं धनचयं प्रवदंति सतः ॥ १४७ ॥

जो लग्नेश मंगलके साथ कर्मस्थानमें प्राप्त हो, कर्मेश केन्द्र अथवा त्रिकोणमें हो, सौम्यग्रह उसको देखता हो तो वंशमें राजाके तुल्य धनागम हो॥१४७॥

तृतीये च शुक्रे गुरुर्धर्मचारी विधुर्मंदयुक्तो यदा लग्नवर्ती ॥ प्रसूतेश्च वृद्धिर्महत्कीर्ति-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लाभं तदारिष्टनाशं च शक्रस्य तुल्यम् ॥ १४८ ॥

शुक्र तीसरे, धर्मस्थानमें गुरु, लग्नमें शनियुक्त चन्द्रमा हो तो सन्तानवृद्धि महान् कीर्तिलाभ अरिष्ट नाश और इन्द्रतुल्य पराक्रम हो ॥ १४८ ॥

जन्मपे गुरुयुते च कंटके लाभनाथसबले विलोकिते ॥ तत्समं सकलरिष्टविनाशमंधकारमिव भास्करोदयात् ॥ १४९ ॥

जो जन्मपति गुरुसहित केन्द्रस्थानमें हो, लाभेश बली देखताहो उस वर्षके सब अरिष्ट इसप्रकार नाश होजातेहैं जैसे सूर्योदयसे अंधकार ॥ १४९ ॥

कन्यालग्ने भार्गवे मूर्तिसंस्थे जायाभावे चार्कजे पापयुक्ते ॥ तस्मिन्वर्षे मानवानां हि कष्टं भार्यामृत्युर्निश्चितं तत्र वर्षे॥१५०॥

कन्यालग्नका शुक्र मूर्तिमें स्थित हो स्त्रीभावमें शनि पापग्रहयुक्त हो उस वर्षमें मनुष्योंको कष्ट और भार्याकी मृत्यु अवश्य हो ॥ १५० ॥

कर्मस्थाने भार्गवे सोमपुत्रे मूर्तौ भावे देवपूज्ये सचंद्रे ॥ तस्मिन्वर्षे भूपतेश्छत्रयोगः प्रज्ञा चैवं सिंधुपर्यंतसेतुः ॥ १५१ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो कर्मस्थानमें शुक्र बुधके साथ हो मूर्तिभावमें गुरु चन्द्रमाके सहित हो उसवर्षमें राजासे छत्रयोग है उसकी बुद्धिका सर्वत्र प्रकाश हो ॥ १५१ ॥

समाधिपे केंद्रगते बलिष्ठे सप्तांगनाथोऽथ तदुच्चनाथः ॥ केंद्रस्थिते सौम्ययुतेर्थलाभं रिष्टं विनाशं सुखमिंद्रतुल्यम् ॥ १५२ ॥

जो वर्षलग्नपति केन्द्रमें प्राप्त और बलिष्ठ हो और सप्तमेश उच्च लग्नका स्वामी केन्द्रमें स्थित सौम्यग्रहोंके साथ हो तो अर्थलाभ अरिष्ट नाश और इन्द्रके तुल्य सुख प्राप्त होताहै ॥ १५२ ॥

समाधिपो वा तनुनायको वा वीर्याधिकश्चेच्छुभखेटयुक्तः ॥ पश्येद्विलग्नं किल तत्र वर्षे स्याच्छोभनं रिष्टविनाशनं च ॥ १५३ ॥

जो वर्षलग्नका स्वामी वा लग्नेश अधिक बली शुभग्रहोंसे युक्त हो और विलग्नको उस वर्षमें देखता हो तो अच्छा है और अरिष्टका नाशक है ॥ १५३ ॥

मुंथाधिनाथो यदि केन्द्रसंस्थो लग्नाधिपे कर्मगते बलिष्ठे ॥ द्यूनस्थिते कर्मपतौ सवर्षे मुन्थाकृतं रिष्टहरश्च नूनम् ॥ १५४ ॥

जो मुंथापति केन्द्रमें स्थित हो, लग्नेश कर्ममें प्राप्त

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और बलवान हो कर्मेश सप्तममें स्थित हो तो मुंथाका किया सम्पूर्ण अरिष्ट दूर होतेहैं ॥ १५४ ॥

धीस्थानस्थे कर्मगे भूमिपुत्रे क्रूरैर्युक्ते वीक्षिते वा तदाब्दे॥ लग्नस्वामी रंध्रगश्चोर्ध्वपातं नूनं रिष्टं मानवानां च तस्य ॥ १५५॥

बुद्धिके स्थान पंचम तथा कर्मस्थानमें मंगल क्रूर ग्रहोंके साथहो वा क्रूरग्रह देखते हों लग्नेश रन्ध्रस्थानमें प्राप्त हो तो मनुष्योंको अरिष्ट हो ऊर्ध्व पातहो १५५॥

कर्माधीशे कर्मगे सौम्ययुक्ते लग्नाधीशे केंद्रसंस्थे तदानीम्॥ रिष्टं नाशं भूपवर्गाच्च लाभं शत्रोर्नाशं चांगनानां सुखं च १५६॥

जो कर्मेश कर्मस्थानमें प्राप्त हो सौम्यग्रहयुक्त हो और लग्नेश केन्द्रमें स्थित हो तो अरिष्टनाश राजपक्षसे लाभ शत्रुका नाश तथा स्त्रीजनोंका सुख हो॥१५६॥

जन्मलग्नपतौ वर्षगेऽष्टमे क्रूरयुक्तेऽथ वा विलोकिते ॥ मृत्युव्ययाय रसाष्टमे स्थिते शस्त्रघातकृते खल्वब्दके ॥ १५७ ॥

जो जन्मलग्नका स्वामी वर्षमें अष्टम हो क्रूरग्रहसे युक्त हो अथवा क्रूरग्रह देखते हों, तथा व्यय १२ और अष्टम स्थानको देखतेहों तो उसवर्षमें शस्त्रघातसे मृत्यु हो ॥ १५७ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुखे यदा नीचगतेंद्रपूज्ये सुखाधिपे नीच-
गते कलत्रे ॥ लाभाधिपे मृत्युगते हि वर्षे
करोत्यरिष्टं च चतुर्थमासे ॥ १५८ ॥

जो बृहस्पति चौथे हों और सुखेश नीचका सप्तम स्थानमें प्राप्तहो और लाभेश अष्टम होतो चौथे महीने में अरिष्ट करताहै ॥ १५८ ॥

प्रसूतिकाले खलु जन्मलग्नं सवर्षगे लग्नगतं
नराणाम् ॥ कर्मोदयं बाहुबलं प्रतापं दुष्टैः
कृतं कष्टभयं विनाशम् ॥१५९॥

जो जन्मलग्न और वर्षलग्न जो एकही होजाय तो उस वर्षमें कर्मका उदय अनेक प्रताप बाहुबलका उदय और दुष्टोंके किये भयको नाश हो ॥ १५९ ॥

जन्मलग्नपतिवर्षलग्नतः कंटकायनवपंचमे
गतः॥रिष्टयोगसकलं खलु नाशं धर्मकर्म
कुरुते बहु पुंसाम् ॥ १६० ॥

जो जन्मलग्नका पति वर्षलग्नसे केन्द्रस्थान अथवा नववें और पांचवें स्थानमें प्राप्त हो तो सब अरिष्ट योगका नाश और धर्मकर्मकी प्राप्ति करताहै ॥१६०॥

जायाभावपतिस्तथा सुखपतिर्लग्नेऽथवा स-
प्तमे सौम्ये खेटविलोकिते च सहिते शृङ्गा-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रयोगप्रदः ॥ स्त्रीणां सौख्यसमागमं प्रकुरुते स्वाद्वर्गतो लाभदस्तारं रत्नहिरण्यकर्माणि सद्भूमिलब्धं सुखम् ॥ १६१ ॥

जो सप्तमेश सुखेश लग्नमें अथवा सप्तम हो और सौम्यग्रहके सहित हो या सौम्य ग्रहकी दृष्टि हो यह शृंगार योगदाता स्त्रीसमागमसुख देनेवाला अपने वर्गसे लाभ रत्न सुवर्ण कर्मप्राप्ति करनेवाला तथा भूमिसुख करताहै ॥ १६१ ॥

मंदोच्चमिश्रास्त्रिषडायवर्ती सौम्यस्य युक्तं प्रकरोति लाभम् ॥ रिष्टंविनाशं नृपतोर्थलाभं करोति सौख्यं बहुलं प्रतापम् ॥ १६२ ॥

जो शनि उच्चके तीसरे छठे सौम्ययुक्त होतो लाभ करता है अरिष्टका नाश राजासे अर्थलाभ सुख और प्रताप करताहै ॥ १६२ ॥

केंद्रत्रिकोणे च गतोऽब्दनाथःसौम्येच रम्यं सकलं तदाऽब्दे ॥ शत्रोर्विनाशं धनधान्यलाभं यशःप्रदं वै खलु शत्रनाशम् ॥ १६३ ॥

जो वर्षपति केन्द्र वा त्रिकोणमें स्थित हो और सौम्य ग्रहसे युक्तहो तो उससम्पूर्ण वर्षमें शुभ हो, तथा शत्रुनाश धनधान्यका लाभ यशदाता शत्रुनाश करताहै। १६३।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सप्तमे च यदा राहुर्भौमचन्द्रसमन्वितः ॥ कलत्रेशो यदा चास्ते तदा स्त्रीनिधनं ध्रुवम् ॥ १६४ ॥

जो राहु सातवें मंगल और चन्द्रमाके सहित कलत्र स्थानके पतिके साथ स्थित हो तो अवश्य स्त्रीका निधन होता है ॥ १६४ ॥

वर्षेन्दुकर्काख्यविलोमसंस्थे राहुर्भवेदिष्ट-विनाशकर्तुः ॥ शुभाश्च योगा बहवो यदि स्युस्तथाऽप्यरिष्टं विलयं प्रयाति ॥१६५॥

जो वर्षमें कर्कका राहु यदि लग्नमें हो तो इष्टका नाश करता है और जो अनेक शुभयोग हों तो अरिष्ट दूर भी हो जाते हैं ॥ १६५ ॥

नक्रत्रये लाभरिपुत्रिसंस्थे केतुस्तु हेतुर्निध-नोपशांतैः ॥ परस्परं भार्गवजीवसौम्यास्त्रि-कोणगास्तेऽपि हरंत्यरिष्टम् ॥ १६६ ॥

मकरकुंभ मीन लग्न एकादश और छठे घरमेहों केतु अष्टमघरमें हो शुक्र जीव सौम्यग्रह युक्त परस्पर देखें वा स्थित हों तो अरिष्ट दूर होते हैं ॥ १६६ ॥

खल्लासरोनामयदा च योगस्तदा हि वर्षे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुरुते नराणाम् ॥ महाव्यथां चोदरपित्त-
कोपैःसपुत्रबन्धोश्च भवेदरिष्टम् ॥ १६७ ॥

और जब खल्लासरयोग वर्षमें हो तो उस वर्षमें मनुष्योंको महाव्यथा हो उदरमें व्यथा पित्तका कोप तथा पुत्र और बंधुओंमें अरिष्ट हो ॥ १६७ ॥

सौम्यास्त्रयो लग्नगता यदि स्युः कुर्वंति
नाना नृपतीन्विनीतान् ॥ पापास्त्रयो दुःख-
दरिद्रशोकैर्युक्तं नितांतं बहुभाग्यकं च १६८

तीनों सौम्यग्रह यदि लग्नमें स्थित हो तो अनेक सुख नृपतुल्य करते हैं और जो तीनों पापग्रह लग्नमें हों तो दुःख दरिद्र शोक करते हैं ॥ १६८ ॥

भाग्ये च लाभे सहजे च केंद्रे चेद्वर्षकाले
मुथहाधिनाथः॥ करोति पुंसां विपुलप्रतापं
मैत्रींनृपात्सन्मतिवर्द्धनं च ॥ १६९ ॥

जो मुंथापति दशवें ग्यारहवें तीसरे पहले चौथे सातवें दशवें स्थानमें हो तो मनुष्यको प्रतापयुक्त राजासे सन्मान भागी करता है ॥ १६९ ॥

सप्तांशवर्गे यदि सप्तमस्थे राहौ सखेटे खलु
तत्र नाशम् ॥ तदा नराणांबहुकन्यकानां
स्वप्नेऽपि पुत्रः खलु दुर्लभः स्यात्॥१७०॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो सप्तांशवर्गका स्वामी सप्तममें स्थित हो वा राहुके सहित होतो अनिष्ट होता वा कन्याही उत्पन्न होती है स्वप्नमें भी पुत्र दुर्लभ होताहै ॥ १७० ॥

भृत्यारिनाथो यदि द्वादशस्थःक्रूरैर्ग्रहैर्युग्यदि वा च सौरिः ॥ तदा हि वर्षे प्रकरोति शीघ्रं हरत्यरिष्टं निजवर्गमुख्यैः ॥ १७१ ॥

अष्टम छठेका स्वामी यदि बारहवें स्थानमें स्थित हो अथवा सूर्यपुत्र क्रूरग्रहोंसे युक्त हो तो उस वर्षका अरिष्ट दूर होता है तथा अपने वर्गका अरिष्ट होताहै॥

(रोमताजिके)

मुंथाधिनाथो यदि मृत्युभावे षष्ठे च मुंथा भवतीह वर्षे ॥ तदा हि बालान्कुरुतेंगपीडां सहोदरैर्गुल्मकृतं ह्यरिष्टम् ॥ १७२ ॥

रोमताजिकमें लिखाहै कि, मुंथापति यदि मृत्युभावमें स्थितहो और छठे घरमें मुंथाहो तो स्त्रीके अंगमें पीड़ा उदरमें गुल्मादि रोग तथा अरिष्ट हो ॥ १७२ ॥

सौख्याधिपेऽरिव्ययगेऽष्टमस्थे पापान्विते जन्तुषि तुर्यपतौ च दग्धे ॥ क्रूरेक्षिते प्रकुरुते खलु तत्र वर्षे मातुः क्षयं विविधरुक्प्रकरोति शीघ्रम् ॥ १७३ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चौथेघरका स्वामी यदि छठे बारहवें आठवें पापग्रह-संयुक्तहो लग्न और चतुर्थपति दग्धहो क्रूरग्रह देखते हों तो उस वर्षमें माताका क्षय अनेक रोग होतेहैं ॥१७३॥

सौख्याधिपे जन्तुषि पूर्णबले च केंद्रे लाभ-त्रिकोणभवने खलु सौम्ययुक्ते॥सौख्यागमं धनचयं खलु शत्रुनाशं भूपाज्जयं च खलु मातृसुखं हि वर्षे ॥ १७४ ॥

सुखस्थानका स्वामी जन्ममें पूर्ण बलयुक्तहो वा केन्द्रस्थान लाभ स्थान त्रिकोणमें सौम्यग्रहसे युक्तहों तो सुखकी प्राप्ति धन यश मिले, शत्रुनाश और वर्षमें माताको सुख हो ॥ १७४ ॥

मुंथाधिनाथो यदि लग्ननाथःषष्ठाष्टमे क्रूर-युतिं करोति॥मृत्युः स्वपाके कुरुते नराणां फलं तदर्द्धं शुभदृष्टियुक्ते ॥ १७५ ॥

जो मुंथापति और लग्नपति छठे अष्टम क्रूरग्रहोंसे युक्तहों तो मनुष्योंकी निज दशासे मृत्यु करतेहैं और शुभग्रहकीदृष्टिहो तो इनसे आधा फलहोताहै ॥१७५॥

कर्माधिनाथो यदि कर्मभावे धनाधिनाथो यदि पंचमस्थः॥ तदा नराणां धनधान्य-लाभं शत्रुक्षयं चैव हरत्यरिष्टम् ॥ १७६ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कर्म स्थानका मालिक यदि कर्मस्थानमें स्थितहो धनका स्वामी यदि पंचम भावमें स्थितहो तो मनुष्यों को धनधान्यका लाभ शत्रुक्षय और अरिष्टका नाश होता है ॥ १७६ ॥

सहजभावपतिर्यदि मृत्युगः खलखगैस्सहितोऽथविलोकितः ॥ विविधकष्टकरंतनुपीडनं भवति भ्रातृवियोगकरं च परम्॥१७७॥

तीसरे स्थानका स्वामी यदि मृत्युस्थानमें स्थितहो और क्रूरग्रह उसको देखते हों तोअनेक कष्ट शरीरपीडन तथा भाईका वियोगभी हो ॥ १७७ ॥

संताननाथो रविमंडलस्थः सन्तानभावेयदि पापखेटाः ॥ तदा च वर्षे धनधान्यनाशं संतानकष्टं कथितं मुनींद्रैः ॥ १७८ ॥

जो पंचम घरका स्वामी सूर्यमंडलमेंस्थित हो संतानके घरमें यदि पापग्रह हो तो उस वर्षमें धनधान्यका नाश और सन्तान कष्ट होताहै ऐसा मुनीन्द्र कहतेहैं १७८

धनस्थिते नीचखगे सपापे धनाधिनाथे यदि पापयुक्ते ॥ तदा हि वर्षे कुरुते नराणां धनादिचिंतां विविधप्रकारैः ॥ १७९ ॥

धनस्थानमें नीचका पापग्रह पडे धनका अधिपति

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि पापयुक्त हो तो उस वर्षमें मनुष्यको अनेक प्रकार धनादि चिंता होती है ॥ १७९ ॥

मीनास्थिते देवगुरौ च केंद्रे पापेन युक्तेऽप्यथवा विलोकिते ॥ तदा हरेद्वै सकलं त्वरिष्टं तमो यथा भास्करदर्शनेन॥१८०॥

जो देवगुरु मीनके केन्द्रमें स्थित हो और पापग्रहसे युक्त हो वा उनको पापग्रह देखता होतो सब अरिष्ट ऐसे नाश होजातेहैं जैसे सूर्यके दर्शनसे अंधकार ॥ १८०॥

मुन्थाधिनाथो यदि पंचमस्थस्तस्याधिपे भाग्यगते स्वनीचे ॥ तदा च वर्षे बहुलाभकारी नरेंद्रतुल्यं कुरुते हि वर्षे ॥ १८१ ॥

जो मुंथापति पंचम हो उसका स्वामी भाग्यस्थानका नीचमें प्राप्त हो तो उस वर्षमें बहुत लाभ करनेवाला है मनुष्यको राजाके तुल्य करता है ॥ १८१ ॥

मृत्योर्निवेशो यदि शत्रुभावे लाभाधिपे लाभगते नराणाम्॥ सुतस्य सौख्यं गृहमित्रलाभं हरत्यरिष्टं स करोति शीघ्रम् १८२॥

जो अष्टमस्थानका स्वामी शत्रुभावमें हो और ग्यारहवें घरका ग्यारहवें घरमें स्थितहो तो पुत्रसुख धन मित्रका लाभ और सब अरिष्टको दूर करता है १८२ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लग्नाधिनाथोयदि कर्मनाथ एकोयदिस्या-
त्किल पंचमस्थः॥तदा हि वर्षे धनधान्य-
लाभं नृपोत्तमैर्मैत्र्ययशःप्रकर्षम् ॥१८३॥

जो लग्न और कर्म स्थानका मालिक एकही पंचम स्थानमें पड़ा है तो उसवर्षमें धनधान्यलाभ, राजोंसे उत्तम मित्रता और यशका उदय हो ॥ १८३ ॥

कर्माधिनाथो यदि सौम्यखेटैर्धने सुखे वा
सहजालयस्थे ॥ चतुष्पदो वाधिपतिश्च
केन्द्रे अश्वाधिरूढं च नृपालयस्थे॥१८४॥

कर्मस्थानका अधिपति यदि सौम्यग्रहोंके साथ हो धन सुख वा सहज स्थानमें स्थितहो वा चतुष्पदका अधिपति केन्द्रमेंहो वा दशममें हो तो घोडेकी सवारी प्राप्त होती है ॥ १८४ ॥

लाभाधिनाथो यदि शत्रुनाथ एको यदि
स्यात्तनुभावयातः॥ तदा हि वर्षं प्रकरोति
शीघ्रमश्वादिरूढं नृपदत्तमानम् ॥१८५॥

ग्यारहवें और छठे घरका स्वामी एकही होकर यदि तनुभावमें प्राप्तहो तो उस वर्षमें मनुष्यको घोडेकी सवारी और राज्यमान प्राप्त होताहै ॥ १८५ ॥

धनाधिनाथो व्ययभावयातो व्ययाधिना-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

थो मृतिभावसंस्थः॥तदा हि वर्षे शिवपूज-
नीयस्स्वज्ञातिमध्ये व्ययमाधिकं च१८६

जो धनका अधिपति व्ययस्थान १२ वें हो और बारहवें घरका स्वामी अष्टमहो तो उस वर्षमें शिवका पूजन करै, स्वजातिमें अधिक व्ययकी प्राप्ति होतीहै ॥ १८६ ॥

मुंथाधिनाथो यदि कर्मभावे सौम्यग्रहैर्यु-
क्तनिरीक्षिते च ॥ तदा च वर्षे सकलार्थ-
लाभं निरोगतां बाहुबलप्रतापम् ॥१८७॥

जो मुंथापति कर्मभावमें स्थितहो और सौम्य ग्रह से युक्तहो वा उसको सौम्य ग्रह देखतेहों तो उसवर्षमें सब अर्थकी प्राप्ति निरोगता और बहुत बाहुबलका प्रताप होताहै ॥ १८७ ॥

तृतीयस्थो यदा राहुः षष्ठे सौरिसमन्विते॥
रिपुरोगाविनश्यंति स्वकुलेचनृपोत्तमैः१८८

जो तीसरे राहु और छठे सूर्यहो तो शत्रु और रोगों का नाश हो अपना कुल राजाकी समान बढै॥१८८॥

त्रिषडायव्यये पापा धने सौम्यशुभेक्षिताः
॥ तदा वर्षं विजानीयात्प्रीतिश्चैव नृपो-
त्तमैः ॥ १८९ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तीसरे छठे ग्यारहवें बारहवें धनस्थानमें पापग्रह सौम्ययुक्त हों वा सौम्यग्रहकी दृष्टिसे युक्त हो तो उस वर्षमें राजासे प्रीति होगी ऐसा जानै ॥ १८९ ॥

यदार्कपुत्रो बलवान्व्ययस्थः सौम्येक्षितो वा खलु सौम्ययुक्तः॥ तदा नराणां बहुकष्ट-नाशं शरीरसौख्यं कथितं मुनींद्रैः॥१९०॥

जो शनि बलवान् होकर बारहवें घरमें स्थितहो सौम्यसे दृष्ट हो वा सौम्यग्रहसे युक्तहो तो मनुष्योंका कष्ट नाश शरीरमें सुख हो यह मुनिजन कहते हैं ॥ १९० ॥

हर्षस्थाने संस्थिते चार्कपुत्रे सौम्यैर्दृष्टे साधिकारे बलिष्ठे ॥ जीवे केंद्रे वीर्ययुक्ते हि वर्षे शत्रोर्नाशं रिष्टभंगं करोति ॥ १९१ ॥

जो शनि हर्षस्थानमें स्थित हो, सौम्यग्रहकी दृष्टि और अपने घरका हो और केन्द्रमें बृहस्पति हो तो शत्रुका नाश और अरिष्ट भंग हो ॥ १९१ ॥

जन्माधिनाथो यदि सौम्ययुक्तो मुंथाधिनाथस्सहितस्तृतीये॥ तदाहि वर्षे कुरुते नराणां हरत्यरिष्टं सकलं ग्रहाणाम् ॥ १९२ ॥

जो जन्मलग्नका मालिक सौम्यग्रहसे युक्तहो, और मुंथापति तीसरे हो तो उसवर्षमें मनुष्यके सम्पूर्ण अरिष्ट दूर होते हैं ॥ १९२ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्रिराशिनाथो यदि कर्मभावे कर्माधिनाथो नवपंचमे च ॥ तदा हि वर्षे प्रकरोति नूनं हरत्यरिष्टं कथितं मुनींद्रैः ॥ १९३ ॥

जो त्रैराशिपति कर्मभावमें स्थितहो और कर्मस्थानका अधिपति नवमें पांचवें स्थितहो तो उसवर्षमें अवश्यही सम्पूर्ण अरिष्ट दूर होते हैं ॥ १९३ ॥

लग्ने राहुस्तथा सौरी रंध्रे देवगुरुर्यदा॥मूर्तौ षष्ठाष्टमश्चंद्रो गृहे ज्वलति पावकः ॥१९४॥

जो लग्नमें राहु सूर्यपुत्र अष्टममें देवगुरु हो मूर्त्तिमें तथा छठे आठवें चन्द्रमा स्थित हो तो घरमें अग्नि प्रज्वलित होती है ॥ १९४ ॥

यदा सवीर्यो मुथहाधिनाथो लग्नाधिपो जन्मविलग्नगो वा॥ केंद्रत्रिकोणायगतस्तदानीं सुखार्थलाभं विनिहन्त्यरिष्टम् ॥ १९५॥

जो मुंथापति बलवान् हो लग्नके अधिपति लग्नस्थानमें हो तो वा केन्द्र और त्रिकोणमें प्राप्त हो तो सुख अर्थलाभ और अरिष्टनाश हो ॥ १९५ ॥

भौमे यदा जन्मनि चाष्टमस्थे वर्षे सपापे दशमस्थिते च॥नीचर्क्षगे वा रविमंडलस्थे तदाऽर्थलाभं विनिहन्त्यरिष्टम् ॥ १९६ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो मंगल जन्म वा अष्टममें प्राप्तहो और वर्षमें पापयुक्त दशमें स्थानमें स्थितहो नीचमें स्थित हो वा रविमंडलमें स्थितहो तो अर्थलाभ और अरिष्टका नाशहो॥१९६॥

चंद्राद्यदा सप्तमगे च जीवे युक्तेऽथवा स्यात्किल यत्र वर्षे॥करोति सौख्यं विविधार्थलाभमरिष्टनाशं सकलं नराणाम् ॥१९७॥

जो बृहस्पति चन्द्रमासे सप्तम स्थानमें प्राप्तहो अथवा उससे युक्तहो तो अनेक सुख अर्थलाभ और अरिष्टका नाश करताहै ॥ १९७ ॥

केन्द्रे त्रिकोणे च तथा तृतीये स्वोच्चस्थिते भूमिसुतेऽब्दनाथे॥धनं च लाभं किल रिष्टनाशं भूपालतुल्यं प्रकरोति वर्षे ॥१९८॥

जो मंगल वर्षपति केन्द्रत्रिकोण तीसरे वा अपनेसे उच्चस्थानमें प्राप्त हो तो धनलाभ अरिष्टनाश तथा राजाके तुल्य उस वर्षमें करता है ॥ १९८ ॥

सौम्यग्रहैः कंटकगैरसौम्यैस्त्रिषष्ठलाभोपगतैर्विलग्नात्॥कीर्तिं प्रियां पुत्रधने च रत्नं शुभं च वस्त्रादिसुखार्थलाभम् ॥ १९९ ॥

जो सौम्यग्रह केन्द्रमें प्राप्त सौम्य ग्रहसे रहित हो तथा लग्नसे तीसरे छठे वा लाभस्थानमें स्थित हो तो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उसवर्षमें कीर्ति प्रिया पुत्र धन रत्न वस्त्र सुखादिकी प्राप्ति होती है ॥ १९९ ॥

जन्मांगपे वीर्ययुते त्रिकोणे त्रिराशिनाथो यदि कंटकस्थः ॥ क्रूरैरदृष्टे सततं च सौख्यं हरत्यरिष्टं सकलं स वर्षे ॥ २०० ॥

जो जन्मलग्नपति बलवान् त्रिकोणमें प्राप्तहो और त्रिराशिपति केन्द्रस्थानमें स्थितहो क्रूरग्रह न देखते हो तो निरन्तर सुख मिलै और उसवर्षमें सबप्रकार अरिष्ट नष्ट होता है ॥ २०० ॥

द्युनेशो यदा केंद्रगो वीर्ययुक्तः शुभैस्संयुतो वीक्षितो वा नराणाम् ॥ स कर्तांगसौख्यं धनं धान्यलाभं पुण्योदयं शत्रुनाशं करोति ॥ २०१ ॥

सप्तमभावपति जो केन्द्रमें प्राप्त होकर वीर्ययुक्त हो तथा शुभग्रहोंसे संयुक्त वा वीक्षितहो तो सब अंगमें सुख धनधान्यलाभ पुण्योदय और शत्रुका नाश हो ॥२०१॥

कलत्रभावे यदि देवपूज्ये स्वोच्चं गते वा कुजसंयुते वा ॥ तदा च वर्षे धनधान्यलाभं हेमांबरादेर्नृपदत्तमानम् ॥ २०२ ॥

जो बृहस्पति सप्तम हो उच्चका हो वा मंगलके

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

साथ हो तो वर्षमें धनधान्यलाभ सुवर्ण अम्बरादिसे राजाओंसे मान प्राप्त होताहै ॥ २०२ ॥

धनपतिर्यदि लाभगतो गुरुर्नवमभावगतो भृगुसंयुतः ॥ कनकवृष्टिरिलापतिसंग-मादिपुलयं कुरुते स्वदशागते ॥ २०३ ॥

धनका स्वामी यदि ग्यारहवें स्थानमें हो और शुक्रके सहित गुरु भावमें स्थित हो तो राजाके संगमसे सुवर्णवृष्टि हो अपनी दशामें शत्रुका नाश हो ॥२०३॥

मुंथापतिर्लग्नपतिर्युतश्चेन्मृत्युस्थितो मृत्यु-समं करोति ॥ गुह्येंद्रिये वा रुधिरप्रकोपं कंठावरोधं कथितं मुनींद्रैः ॥ २०४ ॥

जो मुंथापति वर्षलग्नके साथ होकर अष्टम स्थानमें स्थितहो तो मृत्युकी सामानही करदेताहै, गुह्येंद्रियमें पीड़ा रुधिरप्रकोप कंठावरोध हो ऐसा मुनिजनोंने कहाहै ॥ २०४ ॥

कलत्रनाथे व्ययगे समंदे कलत्रपीडा कथिता हि वर्षे ॥ लोकापवादं स्वजनेषु वैरं संतानपीडा मनसो विचालः॥ २०५ ॥

जो सातवें घरका मालिक शनिकेसाथ बारहवें घर-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में स्थित हो तो उसवर्षमें कलत्रपीडा करै लोकापवाद स्वजनोंमें वैर सन्तानपीड़ा मनमें व्यग्रताहो ॥२०५॥

लग्ने यदा राहुकवी भवेतां लग्नप्रभू शुक्रस्व-गेनसार्धम् ॥ यानादिकं कर्म तथैव निश्चितं विपश्चितो नीचगृहं वदंति ॥ २०६ ॥

जो लग्नमें राहु और शुक्रहो और लग्नपति शुक्रके साथ हो तो यानादिकर्म निश्चित हो तथा नीचमें प्राप्त होनेसे वैसेही कर्म होतेहैं ॥ २०६ ॥

नीचस्थ लग्नगे भौमे पापयुक्तेऽथ वीक्षिते ॥ तदा कष्टं विजानीयात्स्त्रीणां कष्टं विशेषतः ॥ २०७ ॥

जो नीचका मंगल लग्नमें पापग्रह युक्त हो वा पाप ग्रहकी उसपर दृष्टि हो तो उस वर्षमें विशेषकर स्त्रियों को कष्ट हो ॥ २०७ ॥

जन्मेशस्तनुनायको यदि भवेत्कैंद्रेऽथवा पंचम दृष्टे सौम्ययुते करोति सततं सर्वा-ख्यसौख्यप्रदम् ॥ नानाभूषणहेमसंतति-सुखं पुत्रार्थलाभप्रदं स्त्रीणां सौख्ययुतं करोति सततं सर्वं त्वरिष्टं हरेत् ॥ २०८ ॥

जो जन्मलग्नका अधिपति केन्द्र वा पंचम स्थानमें

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्राप्तहो सौम्यग्रहसे युक्त वा सौम्यग्रहकी दृष्टिसे युक्त हो तो सब प्रकार सुख देताहै,अनेक प्रकारके भूषण वस्त्र सन्तानका सुख तथा स्त्रीजनोंका सुख करताहै तथा अरिष्टभंग करताहै ॥ २०८ ॥

भ्रातृनाथो यदा षष्ठे पापयुक्तो विलोकितः ॥ तदाभ्रातुर्भवेत्पीडाविविधंकष्टदायकम् २०९

जो तीसरे स्थानका स्वामी छठे पापग्रहसे युक्त हो वा पापग्रहकी दृष्टिहो तो भाईको अनेक प्रकारके कष्ट और पीड़ा हो ॥ २०९ ॥

रविसुतो यदि धर्मधनस्थितःकुजयुतो धनसौख्ययुतस्तदा ॥ धनसुखं खलु मित्रभवं सुखं रिपुलयं सुतभे करपीडनम् ॥२१० ॥

जो सूर्यपुत्र धर्म धनस्थानमें स्थित मंगलसे युक्तहो अथवा धन और सुखस्थानमें हो तो धनसुख मित्रका सुख हो शत्रुक्षय हो पांचवें हो तो करपीडन हो॥२१०॥

व्ययस्था गुरुसौर्यर्कास्तस्मिन्वर्षे व्ययाधिकम् ॥ स्वजनैः कुरुते वैरं परेषु च सुखप्रदम् ॥ २११ ॥

जो बारहवें गुरु सूर्य और शनि हो तो उस वर्षमें अधिक खर्चहो अपने जनोंसे वैर और पर जनोंको सुखदेनेवाला है ॥ २११ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथारिष्टहर्ता योगः ।

नीचस्थिते जन्मनि यद्ग्रहश्च तद्वर्षगे भवति चाष्टममित्रभावे ॥ सौख्यप्रदं धनसुखं बहुलं विशालं मित्रागमं सकलरिष्टहरं च वर्षे २१२

जो जन्ममें ग्रह नीचका हो और वर्षमें वही ग्रह अष्टम वा मित्रभावमें हो तो अनेक सुख धनका देनेवाला है मित्रका आगम करनेवाला तथा वर्षमें सम्पूर्ण अरिष्ट दूर करताहै ॥ २१२ ॥

लग्नाधिपे केंद्रगते बलिष्ठे सौम्येक्षिते वा सहिते हि वर्षे ॥ धनं च लाभं खलु रिष्टनाशं गुप्तस्य सौख्यं कथितं मुनींद्रैः॥२१३॥

जो लग्नका मालिक केन्द्रमें प्राप्त हो और बलिष्ठ हो सौम्य ग्रहके सहित हो वा सौम्यग्रह उसे देखता हो तो धनका लाभ अरिष्टनाश और गुप्तसुख हो यह मुनीन्द्रोंने कहाहै ॥ २१३ ॥

यदींथिहेशो निजभाग्यवर्ती स्वोच्चं गतो मित्रशुभैश्च दृष्टः ॥ ददाति लक्ष्मीं गजरत्नहेमप्रवालकाद्यं खलु रिष्टनाशम् ॥ २१४ ॥

जो मुंथाका पति निज भाग्य स्थानमें स्थित हो तथा उच्चस्थानमें प्राप्तहोकर शुभमित्रोंसे देखागया हो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तो लक्ष्मी, गजरत्न, सुवर्ण, मूँगे आदिकी प्राप्ति होती है तथा अरिष्टनाश होताहै ॥ २१४ ॥

लाभाधिपे लग्नगतेऽब्दपेशे लाभस्थिते वा यदि सौम्ययुक्ते ॥ उभौ नभस्थे कुरुते हि वर्षे हरत्यरिष्टं कथितं मुनींद्रैः ॥ २१५ ॥

जो ग्यारहवें स्थानका अधिपति लग्नमें स्थितहो अथवा ग्यारहवें घरकामालिक सौम्यग्रहके सहितलग्नमें स्थित हो तो अथवा दोनों दशमभावमें स्थितहोकर सम्पूर्ण अरिष्टकोदूरकरतेहैं ऐसामुनीन्द्रोंने कहाहै २१५

मृत्युस्थिते भवति चंद्रखगे समुच्चे भावे यदाभवति देवगुरुस्तृतीये ॥ तद्वन्नवांशगत-पंचमगे समुच्चे चंद्रे यदा हरति रिष्टगणं हि वर्षे ॥ २१६ ॥

यदि चन्द्र अष्टमस्थानमें हो और उच्चका हो अथवा देवगुरु तीसरे स्थानमें उच्चकाहो अथवा चन्द्रमा नवांश अथवा पंचमस्थानमें होतो उस वर्षके सम्पूर्ण अरिष्ट दूर करताहै ॥ २१६ ॥

सहजभावपतिःसहजे स्थितो बुधगुरू यदि शुक्रसमन्वितौ॥सकलरिष्टहरं गृहकोद्भवं यदपि चास्तगृहं च जयं कुरु ॥ २१७ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो तीसरे घरका मालिक तीसरे स्थानमें स्थितहो और बुध गुरु यदि शुक्रके साथमें हों तो सम्पूर्ण घरके अरिष्ट दूर करतेहैं यद्यपि सप्तमभावके हों तोभी जय देतेहैं ॥ २१७ ॥

मृत्युस्थिते जन्मनि भूमिपुत्रे वर्षे बलाढ्ये दशमं प्रपन्ने॥चतुष्पदात्स्यात्पतनं तथाब्दे चन्द्रेक्षिते वा विनिहन्त्यरिष्टम् ॥ २१८ ॥

जो मंगल अष्टम लग्नमें अथवा दशवें घरमें हो तो उसवर्षमें चौपायोंसे चोटलगे और चन्द्रमाकी दृष्टिहो तो अरिष्ट दूरहो ॥ २१८ ॥

एकोऽपि जीवबुधशुक्रखगेषुकेंद्रे नीचद्विङ-स्तरहितः सहितश्च सौम्यैः ॥ उद्दाल-कादिऋषिभिर्वचनं प्रयुक्तं दुष्टग्रहात्सक-लरिष्टहरं च वर्षं ॥ २१९ ॥

यदि गुरु, बुध, शुक्र, इनमेंसे कोईएक ग्रहभी केन्द्रमें पड़जाय नीचका न हो और शत्रुके साथ न हो सौम्यग्रहसे संयुक्तहो तो सम्पूर्ण अरिष्ट दूर होतेहैं यह उद्दालकादि मुनियोंका वचनहै ॥ २१९ ॥

रुक्सद्मधिपतिः खलैर्यदि युतो दृष्टोऽथ रोगार्तिदः सौम्यश्चेद्युतवीक्षितो बलयुतो रोगार्त्तिनाशं चरेत् ॥ २२० ॥ (अर्धम्)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रोगके स्थानका स्वामी यदि क्रूरग्रहोंके साथ हो देखताहो तो रोग करताहै और जो सौम्यग्रहयुक्त हो वा सौम्यग्रहकी दृष्टि और बलवान् हो तो रोगका नाश करताहै ॥ २२० ॥

पापो वर्षविलग्नगो हिमरुचिर्वारित्रिलाभ-
स्थितो हन्यात्सौम्ययुतेक्षितो हि सकलं
रिष्टं पुराभाषितम्॥वीर्याढ्योऽपि विलग्नगः
शुभयुतः केंद्रानुगोऽसौ हरिर्दृष्टे सौम्ययुते-
क्षितेऽब्दसमये जीवस्तथा वा भृगुः॥२२१॥

वर्षमें पापग्रह विलग्नमें प्राप्त हुआहो वा चन्द्रमा सुख स्थान ग्यारहवें घरमें स्थित हो और सौम्यग्रहके साथ हो तो सम्पूर्ण अरिष्ट दूर होतेहैं अथवा बली शुभग्रहोंके सहित लग्नके स्थानमें वा केन्द्रमें प्राप्त हो अथवा सौम्यग्रह बृहस्पति वा शुक्र सौम्ययुक्त हो तो सब अरिष्ट दूरकरते हैं ॥ २२१ ॥

लाभे तृतीये यदि सैंहिकेयः सौम्यैश्च
युक्तेऽप्यथवा विलोकिते ॥ तदा त्वरिष्ट-
स्य करोति नाशं लग्नोद्भवो वा मुथहा-
भवो वा ॥ २२२ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि राहु ग्यारहवें तीसरे स्थानमें सौम्यग्रहोंसे युक्त हो वा सौम्यग्रह उसको देखतेहों, तो लग्न अथवा मुंथाके अरिष्टको नाश करतेहैं ॥ २२२ ॥

मुंथोपचयगः सूर्योऽथवा भवति मंगलः ॥ तद्वर्षं क्षेममारोग्यं सकलारिष्टनाशनम् २२३

यदि मुंथाके साथ सूर्यहो वा मंगल हो तो उस वर्षमें क्षेम आरोग्य तथा सम्पूर्ण अरिष्टका नाश होताहै २२३

मुंथाधिनाथो सहजेशयुक्तः सौम्यैश्च युक्ते च निरीक्षिते च ॥ तदा ह्यरिष्टं द्विषतां विवादो भीतादिपातेन करोत्यरिष्टम् ॥ २२४ ॥

यदि मुंथापति सौम्यग्रहोंसे सहित तीसरे स्थानमें हो, या सौम्यग्रहोंसे देखाहुआ होतो महाअरिष्ट शत्रुओंका विवाद तथा भीतादि पातसे अरिष्टहोताहै २२४

तृतीये च शुक्रे गुरौ धर्मचारे विधुर्मंदयुक्तो यदा लग्नवर्ती ॥ विभूत्याश्च वृद्धिर्महत्कीर्तिलाभं तदारिष्टनाशं धनं शक्रतुल्यम् ॥ २२५ ॥

जो तीसरे स्थानमें शुक्र व धर्मस्थानमें गुरु हो और लग्नमें चन्द्रमा और शनि हों तो महाधनकी प्राप्ति महान् कीर्तिलाभ अरिष्ट नाश होकर इन्द्रकी तुल्य ऐश्वर्य होताहै ॥ २२५ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जन्मपे गुरुयुते च कंटके लाभनाथसहिते च विलोकिते ॥ तत्समे सकलरिष्टनाश-नमंधकारमिव भास्करोदयः ॥ २२६ ॥

जन्मलग्नका मालिक बृहस्पतिके सहित हो और केंद्रमें हो तथा ग्यारहवें घरके स्वामीके साथ हो यदि वा उसने देखा हो तो उस समय अब अरिष्ट इसप्रकार नाश हो जाते हैं जैसे सूर्योदयसे अंधकार ॥ २२६ ॥

समाधिपे केंद्रगते बलिष्ठे अब्दांगनाथश्च तदुच्चनाथः॥ केंद्रस्थिते सौम्ययुतेऽर्थला-भमरिष्टनाशं सुखमिंद्रतुल्यम् ॥ २२७ ॥

वर्षलग्नका स्वामी बलिष्ठ केन्द्रस्थानमें स्थित हो अथवा वर्ष और लग्नका स्वामी उच्चस्थानमें हो तो वा सौम्यसहित केन्द्र वा ग्यारहवें स्थानमें स्थित हो तो अरिष्टनाश कर इन्द्रतुल्य सुख करते हैं ॥ २२७ ॥

समाधिपो वा तनुनायको वा वीर्याधिकश्चे-च्छुभखेटदृष्टः॥पश्येद्विलग्नं किल तत्र वर्षे स्याच्छोभनं रिष्टविनाशनं च ॥ २२८ ॥

वर्षलग्नका स्वामी वा जन्मलग्नका स्वामी बलवान् होकर शुभग्रहोंसे देखा गया हो और लग्नको देखै तो उसवर्षमें सम्पूर्ण अरिष्टनाश होते हैं ॥ २२८ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कर्माधिनाथो यदि कर्मभावे सौम्यैश्च युक्तो-
ऽप्यथवाऽपि दृष्टः॥ लग्नाधिपे केंद्रगते तदा-
ब्देऽरिष्टस्य नाशोनृपतोऽर्थलाभः ॥ २२९ ॥

कर्मस्थानका स्वामी यदि कर्मस्थानमें स्थित हो और सौम्यग्रहोंसे युक्त हो अथवा सौम्यग्रह देखते हों और लग्नका मालिक केन्द्रमें प्राप्त हो तो उस वर्षमें अरिष्ट नाश और राजासे लाभ हो ॥ २२९ ॥

मुन्थाधिपो वा यदिकेन्द्रसंस्थो लग्नाधिपो
धर्मगतो बलिष्ठः ॥ द्यूनस्थिते वर्षपतौ स
वर्षे मुन्थाकृतं चैव हरत्यरिष्टम् ॥ २३० ॥

जो मुंथाका मालिक केन्द्रमें हो और लग्नका मालिक धर्मस्थानमें प्राप्त हो और बलिष्ठ हो और वर्षपति सप्तम स्थानमें स्थितहो तो मुंथाके अरिष्टका अवश्य नाश होता है ॥ २३० ॥

कर्माधीशे कर्मगे सौम्ययुक्ते लाभाधीशे
केंद्रसंस्थे तदानीम्॥ रिष्टंनश्येद्भूपवर्गाच्च
लाभं शत्रोर्नाशं चांगनानां सुखं च ॥२३१॥

कर्मस्थानका स्वामी कर्ममें स्थित हो वा सौम्यग्रहोंसे युक्त हो और ग्यारहवें घरका मालिक केन्द्रमेंहो तो अरिष्टनाश राजासे लाभ शत्रुनाश अंगनाका सुख हो ॥ २३१ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जन्मलग्नपतिरन्दलग्नपः कंटकायनवपंचमेऽपि वा॥ रिष्टनाशमवनीशलाभदा धर्मकार्यकरणोत्सवं सुखम् ॥ २३२ ॥

जो जन्मलग्नका मालिक और वर्ष लग्नका स्वामी केन्द्रमें नवममें वा पंचममें हो तो अरिष्टनाश राजासे लाभ और सुखदायक धर्मकार्य होता है ॥ २३२ ॥

कर्माधिपे नीचगतेऽष्टमस्थे कर्मस्थिताः पापमया ग्रहेंद्राः॥ हरंति राज्यं विपुलं सुखं च सुकार्यहानिश्च भवेन्नराणाम् ॥ २३३ ॥

जो कर्मस्थानका स्वामी नीचका होकर अष्टम स्थानमें पडे वा कर्मस्थानमें पापग्रह स्थित हो तो मनुष्योंका राज्य व सुख हरणकर मंगल कार्यकी हानि करते हैं ॥ २३३ ॥

रंध्राधिनाथो यदि कर्मसंस्थो कर्माधिनाथो यदि मृत्युभावे ॥ क्रूरेक्षिते क्रूरयुते हि वर्षे नृपाद्भयं चार्थविनाशनं च ॥ २३४ ॥

जो अष्टम घरका मालिक कर्मस्थानमें स्थित हो और कर्मस्थानका मालिक मृत्यु भावमें स्थित हो क्रूरग्रह देखता हो वा क्रूरग्रहसे युक्त हो तो राजासे भय और अर्थका नाश हो ॥ २३४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एकेऽपि पापेऽष्टमगेऽरिगेहे पापेक्षितेऽब्दे च शिशूनिहन्यात् ॥सुधारसो यद्यपितैस्तुपी-तः किमत्र चित्रं निधने शिशूनाम्॥२३५॥

एक भी पापग्रह अष्टम वा शत्रुके घरमें हो और पापग्रह देखता हो तो बालकोंको नष्टकरे चाहे अमृत क्या न पिया हो अवश्य नष्ट करता ही है ॥२३५॥

सोमस्य सूनुर्यदि कर्कटस्थः षष्ठेऽष्टमे वा भवने विलग्नात्॥चंद्रेण युक्तेऽब्दचतुष्टयेन जातस्य जंतोः प्रकरोत्यरिष्टम् ॥ २३६ ॥

जो बुध कर्कमें स्थित हो अथवा लग्नसे छठें आठवें वा चौथे चन्द्रमासे युक्त हो तो होते ही प्राणीको अरिष्ट करता है ॥ २३६ ॥

बृहस्पतिर्मूर्तितृतीयवर्ती प्रसूतिलग्नाधिप-केन युक्तः॥साम्यन युक्तः खलु शत्रुनाश-मत्यर्थमर्थोपचयं करोति ॥ २३७ ॥

जो बृहस्पति मूर्ति वा तीसरे स्थानमें हो वा लग्नके मालिकसे युक्त हो वा सौम्यग्रहसे युक्त हो तो अवश्य शत्रुका नाश और धनसन्तानकी वृद्धि होती है॥२३७॥

अथ समाधिपतौ ।

अथ समाधिपतौ त्रिखषष्ठगे खलु खगे स-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बले च तदासुखम्॥मनसि हर्षकरं च धना-
गमं रिपुलयं खलु रिष्टविनाशनम्॥२३८॥

जो वर्षलग्नका स्वामी तीसरे छठे दशवें घरमें बलयुक्त हो तो सुख और मनमें प्रसन्नता होती है धनप्राप्ति शत्रु-नाश तथा अरिष्टनाश होता है ॥ २३८ ॥

शुक्रो यदा जीवयुतस्त्रिकोणे लाभे तृतीये
यदि सिंहपुत्रे ॥ तदा त एते सकलं च रिष्टं
हरन्ति पूर्वैः कथितं मुनीन्द्रैः॥ २३९ ॥

जो शुक्र जीवके सहित त्रिकोणमें हो राहु यदि ग्यारहवें वा तीसरे हो तो उस वर्षका अरिष्ट दूर होताहै यह मुनीन्द्रोंने कहा है ॥ २३९ ॥

भौमे यदा सप्तमराशिसंस्थे भावेऽष्टमे देव-
गुरुश्च याते ॥ शुक्रोऽष्टमे चंद्रगते हि वर्षे
खल्लासरं योगमुशंति संतः ॥ २४० ॥

जो सातवें घरमें मंगल हो और अष्टम भावमें देव-गुरु हो शुक्र अष्टम चन्द्रमाके सहित हो तो महात्माओंने इस योगका नाम खल्लासर कहा है ॥ २४० ॥

मृतेर्हिनाथो यदि वै व्ययस्थः क्रूरैर्ग्रहैर्दृ-
ष्टयुतश्च सौरिः ॥ तदा हि वर्षे प्रकरोति
शीघ्रं शरीरकष्टं निजवर्गसंघात् ॥२४१॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अष्टम घरका स्वामी जो बारहवें हो और जब क्रूरग्रह से दृष्ट वा युक्त शनि हो तो उस वर्षमें अपने वर्गसे शरीरको कष्ट हो इसमें संदेह नहीं ॥ २४१ ॥

लग्नाधिनाथोऽथ च कर्मनाथ एको यदि स्यात्किल यत्र वर्षे ॥ हरत्यरिष्टं सकलार्थलाभं कीर्त्युद्गमो भूपसुहृत्तमैश्च ॥२४२॥

जिस वर्षमें लग्न और कर्मका स्वामी एकही हो तो उस वर्षमें सब अरिष्ट दूर होकर सब अर्थका लाभ हो राजा और मित्रोंसे यश तथा सुख मिले ॥ २४२ ॥

मीनस्थिते देवगुरुश्च लग्ने पापेन युक्तेन विलोकितेन ॥ भवेद्विनष्टं सकलं च रिष्टं तमो यथा भास्करदर्शनेन ॥ २४३ ॥

लग्नमें बृहस्पति मीनका हो और पाप ग्रहसे युक्त हो वा देखा हो तो सम्पूर्ण अरिष्ट ऐसे दूर होते हैं जैसे सूर्यके दर्शनसे अन्धकार ॥ २४३ ॥

स्वल्पांशयुक्ते कुमुदैकबंधौ मंदे धनांशे ध्रुवमित्थशालम् ॥ तदा हि वर्षे खलु रिष्टनाशं नरेन्द्रपूज्यो बहुमानकीर्तिः ॥ २४४ ॥

यदि चन्द्रमा अपने थोडे अंशोंमें स्थित हो और शनि मुन्था धनमें स्थित हो तो उस वर्षमें सम्पूर्ण

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनिष्ट नष्ट होते हैं राजासे मान बडाई और कीर्ति मिलती है ॥ २४४ ॥

हर्षस्थाने संस्थिते चार्कपुत्रे सौम्यैर्दृष्टे साधिकारे बलिष्ठे ॥ जीवे केन्द्रे वीर्ययुक्ते स वर्षे शत्रोर्नाशं रिष्टभंगं करोति ॥२४५॥

जो शनि हर्षके स्थानमें स्थित होकर सौम्य ग्रहोंकी दृष्टियुक्त अपने अधिकारमें बलिष्ठ हो और बृहस्पति केन्द्रमें स्थितहो तो शत्रुनाश व अरिष्ट भंग होय ॥ २४५ ॥

जन्माधिनाथो यदि सौम्ययुक्तो मुन्थाधिनाथः सहितस्तृतीये ॥ तदा हि वर्षं कुरुते नराणां हरत्यरिष्टंसकलंग्रहणाम् ॥२४६॥

जन्मलग्नका मालिक यदि सौम्यग्रहोंसे युक्तहो और मुंथा स्थानके स्वामीके साथ तीसरे घरमें पडाहो तो मनुष्योंके उस वर्षमें सब अरिष्ट दूर होते हैं ॥२४६॥

त्रैराशिनाथो यदि कर्मभावे कर्माधिनाथो यदि पंचमस्थः ॥ तदा हि वर्षं प्रकरोति नूनं हरत्यरिष्टं कथित मुनींद्रैः ॥ २४७ ॥

त्रिराशिपति यदि कर्मभावमें स्थितहो और कर्म

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्थानका स्वामी पंचमस्थानमें स्थितहो तो उस वर्षमें सम्पूर्ण अरिष्ट दूर हों ऐसा मुनियोंने कहाहै ॥२४७॥

यदा सवीर्यो मुथहाधिनाथो लग्नाधिपो जन्मविनग्नपो वा ॥ केन्द्रत्रिकोणायगता-स्तदानीं सुखार्थलाभं खलु रिष्टनाशम् २४८

जो मुंथापति बलवान् होकर पडे अथवा लग्नपति वा वर्षका पति केन्द्र वा त्रिकोणमें स्थित हो तो उसवर्ष-में सुख और अर्थलाभ तथा अरिष्टनाश होताहै२४८॥

मुंथ पंचमगे सूर्येऽथवा भवति मंगलः ॥ तद्वर्षं क्षेममारोग्यं सकलारिष्टनाशनम् २४९

मुंथासे सूर्य वा मंगल पंचमस्थानमें पड़े हों तो उस वर्षमें क्षेम आरोग्य और सब अरिष्ट नाश होते हैं ॥ २४९ ॥

लग्नेशलाभाधिपती स्वराशौ युक्ते च केंद्रे त्रिकलाभसंस्थौ ॥ वीर्यान्वितौ चेत्कुरुतो नराणामरिष्टनाशं सकलं हि वर्षे ॥२५०॥

जो लग्नपति और ग्यारहवें स्थानका अधिपति अपने घरमें हों वा केन्द्र लाभ और त्रिकोणमें स्थित हों और बलिष्ठ हों तो उसवर्षके सम्पूर्ण अरिष्ट दूर होतेहैं ॥ २५० ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चंद्राद्यदा सप्तमगश्च जीवो युक्तोऽथवा स्यात्किल यत्र वर्षे ॥ करोति सौख्यं विविधार्थलाभमरिष्टनाशं सकलं नराणाम् ॥ २५१ ॥

जो गुरु चन्द्रमासे सातवें स्थानमें स्थित हो अथवा गुरुयुक्त हो तो अनेक सुख अनेक अर्थलाभ व अरिष्टनाश होकर सब सुख होताहै ॥ २५१ ॥

भौमे यदा जन्मनि चाष्टमस्थे वर्षे सपापे दशमस्थिते च॥नीचर्क्षगे वा रविमंडलस्थे तदार्थलाभं ननु रिष्टनाशः ॥ २५२ ॥

जो मंगल जन्ममें अथवा अष्टमस्थानमें पापग्रहके सहित हो वा दशमस्थानमें स्थित हो नीचहो वा सूर्यके साथ हो तो अर्थलाभ और अरिष्टनाश हो॥२५२॥

केंद्रत्रिकोणेषु तथा तृतीये स्वोच्चस्थितो भौमयुतोऽब्दनाथः ॥ धनं च लाभं किल रिष्टनाशं भूपालतुल्यं प्रकरोति वर्षे॥२५३॥

जो मंगल सहित चंद्र केन्द्र त्रिकोणमें वा तीसरे स्थानमें उच्चमें स्थितहो तो धनका लाभ अरिष्टनाश तथा मनुष्यको राजाके तुल्य करता है ॥२५३॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जन्मेश्वरे हायनलग्ननाथे केन्द्रत्रिकोणाय-
गते बलिष्ठे ॥ तदा नराणां धनधान्यलाभो
ह्यरिष्टनाशः कथितो मुनींद्रैः ॥ २५४ ॥

जो जन्मलग्नका अधिपति और वर्षपति केन्द्र और त्रिकोणमें बलयुक्त प्राप्त हो तो मनुष्योंको धनधान्यका लाभ और अरिष्टका नाश होता है ऐसा मुनिजनोंने कहा है ॥ २५४ ॥

चंद्रे यदा मृत्युगते च लाभे पापग्रहे सौम्य
युतेक्षिते च ॥ तदा हि वर्षे प्रकरोत्यरिष्टं
रिष्टस्य भंगं च करोति नूनम् ॥ २५५ ॥

जो चन्द्रमा अष्टम स्थानमें वा ग्यारहवें स्थानमें पापग्रह और सौम्यग्रहसे युक्तहो वा देखागया हो तो उस वर्षमें अरिष्ट होनेके फलको यह योग भंग करताहै२५५

सिंहीसुते भवति सिंहगते मुहूर्ते षष्ठे गते
हिमकरे मकरे नराणाम् ॥ तस्मिन्हि वर्षे
हतिमेति देहः सशंभुविष्णुर्यदि रक्षिता
स्यात् ॥ २५६ ॥

जो राहु सिंहमें स्थित हो और चन्द्रमा छठे स्थानमें मकरके हो तो विष्णु शिव रक्षा करे तोभी उस वर्षमें अरिष्ट होताही है अर्थात् देह हत होता है ॥ २५६ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लग्नाधिनाथो यदि सप्तमस्थः कलत्रनाथो भवतीह लग्ने॥तदा हि वर्षे सकलार्थसिद्धिं हरत्यरिष्टं कथितं मुनींद्रैः ॥ २५७ ॥

जो लग्नपति सप्तम स्थानमें स्थित हो और सातवें घरका मालिक लग्नमें होतो उस वर्षमें सब अर्थकी सिद्धि होकर अरिष्ट दूर होताहै ऐसा मुनिजनोंने कहा है२५७

धनस्थाने देवगुरुर्नवमे शशिभार्गवौ॥ तदा भाग्योदयो वर्षेऽरिष्टकष्टविनाशनम् २५८॥

जो धनस्थानमें बृहस्पति नवम स्थानमें चन्द्र शुक्र हों तो उसवर्षमें भाग्योदय अरिष्ट कष्ट दूर होतेहैं२५८

निधनलग्नपती रिपुसंस्थितौ यदि विधौ खलखेटयुतेक्षिते ॥ यमकरे विदधाति नरस्तदा यदि न पश्यति देवगुरुस्तदा२५९

जो अष्टम स्थानका मालिक छठे घरमें स्थित हो और चन्द्रमा क्रूरग्रह युक्त हो अथवा क्रूरग्रह उसे देखते हों और उसपर बृहस्पति की दृष्टि न होतो मनुष्य यमलोकको गमन करताहै ॥ २५९ ॥

वाचस्पतौ धर्मगते नराणां सौम्यग्रहे युक्त-निरीक्षिते वा॥तदा हि वर्षे खलु रिष्टनाशं तमो यथा भास्करदर्शनेन ॥ २६० ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो बृहस्पति धर्मस्थानमें स्थितहोकर सौम्यग्रहोंसे देखागया हो तो उसवर्षमें अरिष्टका नाश इस प्रकार होता है जैसे सूर्यके दर्शनसे अंधकार दूर होताहै२६०॥

त्रिधर्मकर्मे रविसौम्ययुक्ते राजप्रियत्वंबहुलार्थलाभम् ॥ करोति राज्यं सकलार्थसिद्धिं हरत्यरिष्टं कथितं मुनींद्रैः॥२६१॥

धर्म कर्म स्थानमें रविसौम्य ग्रहसे युक्तहो तो प्रीति बहुत धनका लाभ सकल अर्थकी सिद्धि होतीहै और अरिष्ट दूर होताहै ऐसा मुनिजनोंने कहाहै ॥ २६१ ॥

अन्तर्दशायां यदि चंद्रमाः स्यान्मंदे धनांशे खलु चाष्टमस्थे ॥ तदा हि वर्षे मिथशालयोगो नरेंद्रपूज्यः स रिष्टलुनाशः ॥ २६२ ॥

जो चन्द्रमा अन्तर्दशामें मंदधन अंश सहित अष्टम स्थानमें स्थित हो तो यह मिथशाल योग है इससे मनुष्य राजसन्मान प्राप्त करताहै अरिष्ट नाश होताहै२६२॥

प्रसूतिकाले किल लग्ननाथे वर्षे यदा केंद्रगते नराणाम् ॥ तदा च वर्षे धनरत्नलाभं हरत्यरिष्टं कथितं मुनीन्द्रैः ॥ २६३ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो जन्म लग्नपति वर्षमें केन्द्रमें पड़गया हो तो वर्षमें धन रत्नका लाभ हो और अरिष्टका नाश हो ऐसा मुनिजनोंने कहा है॥ २६३ ॥ इत्यरिष्टभंगाध्यायः।

* अथ मासफलम् । *

मासेश्वरः शत्रुगतः करोति रोगागमं वाहनवित्तहानिम् ॥ शत्रुदयः कार्यकृता न सिद्धिः प्रमेहपीडा कथिता मुनींद्रैः॥२६४॥

मासफल—जो महीनेका अधिपति शत्रुभावमें हो तो रोगहो और वाहन धनकी हानि हो शत्रुका उदय कार्यकीअसिद्धिप्रमेह और पीड़ाहो ऐसामुनिजनकहतेहैं२६४

तृतीयस्थौ जीवचंद्रौ सुखार्थे यदि भार्गवः॥ तदा मासे सुखं दद्याद्रिष्टकष्टादिनाशनम् ॥ २६५ ॥

जो गुरु और चन्द्रमा तीसरे स्थानमें स्थित हों तथा चौथेमें शुक्र हो तो उस महीनेमें सुख हो अरिष्ट और कष्टादिका नाश हो ॥ २६५ ॥

मासेश्वरो मृत्युगतः करोति शरीरकष्टं विविधप्रकारैः॥ शत्रूदयं शत्रुभयं नराणां शरीरतापं कथितं मुनींद्रैः ॥ २६६ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि महीनेका अधिपति अष्टम स्थानमें प्राप्त हो तो शरीरमें अनेक प्रकारके कष्ट होतेहैं शत्रुका उदय भय और शरीरका संताप अनेक प्रकारसे होताहै ॥२६६॥

मासेश्वरे केंद्रगते शुभेन दृष्ट युते वा बहुक-
ष्टनाशम् ॥ धनागमं कांतिविवर्द्धनं च
करोति सौख्यं विविधप्रकारैः ॥ २६७ ॥

यदि मासका अधिपति केन्द्रमें प्राप्त हो शुभग्रहकी दृष्टिहो तो अनेक कष्टनाश होतेहैं तथा धनका आगम कान्तिकी वृद्धि और अनेक प्रकारका सुखहोताहै२६७

लग्नस्थितो देवगुरुस्सुखे च बुधभार्गवौ ॥
तस्मिन्मासे सुखं लाभो धनधान्यं नृपो-
त्तमः ॥ २६८ ॥

जो देवगुरु लग्नमें स्थित हो बुध शुक्र सुखस्थानमें प्राप्त हों तो सुखलाभ धनधान्यकी प्राप्तिहोतीहै२६८॥

मासेश्वरोमृत्युगतोव्ययस्थःशत्रूदयः स्याद्
विविधप्रकारैः॥ज्वरार्तिकष्टं खलु शत्रुघातो
विषाग्निपीडा कथिता मुनींद्रैः ॥ २६९ ॥

यदि मासका अधिपति अष्टम हो तो शत्रुका उदय और ज्वरकष्ट शत्रुघात विषाग्निकी पीडा अनेक प्रकारसे हो ऐसा मुनिजनोंने कहा है ॥ २६९ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तृतीयस्थे यदा सूर्ये कर्मस्थे च बृहस्पतौ॥
तदा मासे सुखं दद्याद्रिष्टकष्टादि-
नाशनम् ॥ २७० ॥

जो सूर्य तीसरे स्थानमें हो और बृहस्पति कर्म-स्थानमें हो तो उस महीनेमें सुख हो, अरिष्ट कष्टका नाश हो ॥ २७० ॥

मासेश्वरो लग्नगतःकरोति धनागमं संतति-
मेव सौख्यम् ॥ कर्मोदयं बाहुबलप्रतापं
शत्रुक्षयं स्यात् खलु राजमानम् ॥ २७१॥

मासपति यदि लग्नमें प्राप्तहो तो धनका आगम और सन्तानका सुखहोताहै तथा कर्मोदय बाहुबलका प्रताप शत्रुका क्षय और राजमान प्राप्त होताहै ॥ २७१ ॥

लग्नाधिनाथः खलु रन्धनाथ एको यदि
स्यात्किल मृत्युभावे॥ तदाहि मासे रुधिर-
प्रकोपःशरीरकष्टं विविधप्रकारैः ॥ २७२ ॥

जो लग्नका अधिपति और अष्टमस्थानका स्वामी मृत्युभावमें स्थित हो तो उस महीनेमें रुधिरका कोप और अनेक प्रकारसे शरीरमें कष्टहो ॥ २७२ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सप्तमस्थो यदा चंद्रो राहुणा यदि संयुतः ॥
तस्मिन्मासेमहत्कष्टंस्त्रीणांकष्टं विशेषतः२७३

जो सातवें स्थानमें राहुके साथ चन्द्रमाहो तो उस मासमें महाकष्टहो विशेषकर स्त्रियोंको कष्टहो ॥२७३॥

चंद्रात्पंचगमो जीवो जीवान्नवमगः शशी॥
तदारिष्टं न कुरुते रिपुरोगप्रणाशनम्२७४॥

जो चन्द्रमासे पंचम स्थानमें गुरु और गुरुसे नवमें स्थानमें चन्द्रमा होतो अरिष्ट न हो शत्रु और रोगका नाश हो ॥ २७४ ॥

मूर्तिस्थाने यदा शुक्रो द्विजराजेन संयुतः॥
तस्मिन्मासे मुदं दद्याद्धनधान्यसुतै-
स्सुखम् ॥ २७५ ॥

जो मूर्तिस्थानमें शुक्र चन्द्रमाके साथ हो तो आनन्दके साथ उस महीनेमें धनधान्य सुतका सुख हो२७५

व्ययस्थे च यदा सूर्ये धनस्थे रविपुत्रके॥
तदा नेत्रांगपीडा स्यादित्युक्तं तु मुनी-
श्वरैः ॥ २७६ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो ग्यारहवें स्थानमें सूर्य और धनस्थानमें रविपुत्र हो तो नेत्र और अंगोंमें पीड़ा हो ऐसा मुनीश्वरोंने कहाहै ॥ २७६ ॥

नवमस्थे मृगे भौमे मुंथानाथश्च पंचमे॥ तदाऽरिष्टं न कुर्वीत सद्भिः सत्यमितीरितम् ॥ २७७ ॥

नवमें स्थानमें मकरका मंगल हो मुंथापति पंचम हो तो अरिष्ट नहीं होताहै ऐसा संतलोगोंने कहा है २७७॥

मासेश्वरः पंचमगः करोति धनागमं संततिमेव सौख्यम्॥संताननाथो यदि चाष्टमस्थः संतानपीडा खलु तत्र मासे ॥२७८॥

मासाधिपति यदि पंचम भावमें स्थित हो तो धनागम और संततिका सुख करताहै और पंचम घरका स्वामी यदि अष्टम स्थित हो तो अवश्य उस मासमें संतान पीड़ा होतीहै ॥ २७८ ॥

अष्टमस्थो यदा भौमश्चंद्रसूर्यारियुग्मवेत् ॥ तदा गुह्येंद्रिये पीडा रुधिरस्रावतो ध्रुवम् ॥ २७९ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो मंगल अष्टम स्थानमें स्थित होकर चन्द्रमासे युक्त हो तथा सूर्य मंगलके साथ हो तो गुह्येन्द्रियमें पीड़ा और शरीरमें अवश्यही रुधिरस्राव हो ॥२७९॥

मासेश्वरो भाग्यगतो नराणां भाग्योदयं धर्मविवर्द्धनं च ॥ स्त्रीणां विलासं खलु मित्रलाभं संतानसौख्यं प्रकरोति नूनम् ॥ २८० ॥

जो मासाधिपति भाग्यस्थानमें प्राप्त हो तो भाग्योदय तथा धर्मकी वृद्धि स्त्रीविलास मित्रलाभ संतानका सुख प्राप्त होताहै ॥ २८० ॥

मासेश्वरः पंचमगः करोति धनागमं संततिमेव सौख्यम् ॥ स्त्रीणां विलासं रिपुरोगनाशं सुखार्थसिद्धिं तनुतेऽत्र मासे २८१

मासाधिपति पंचमस्थानमें हो तो धनागम और सन्तानका सुख करताहै, स्त्रीविलास शत्रु और रोगका नाश सुखकी सिद्धि उस मासमें होती है ॥ २८१ ॥

चतुर्थस्थे यदा सूर्ये दशमे पाप एव च ॥ तदा राजभयंकुर्यान्मनश्चिंताविशेषतः२८२

चौथे स्थानमें सूर्य और दशमें स्थानमें पापग्रह होतो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उस समय राजभय और विशेषकर मानसी चिन्ता रहती है ॥ २८२ ॥

चंद्रो मूर्तौ यदा राहुयुक्तश्चैव यदा भवेत् ॥
तदा मासे शरीरे च कृशताज्वरपीडनम् २८३

मूर्तिमें चन्द्रमा यदि राहुके साथ होतो उस महीनेमें शरीर कृश और ज्वरसे पीड़ा होतीहै ॥ २८३ ॥

नवमस्थो यदा भौमो भृगुयुक्तो यदा भवेत्॥तदा मासे सुखं दद्याद्रिष्टकष्टादिनाशनम् ॥ २८४ ॥

नौमें स्थानमें यदि मंगल शुक्रसे युक्त हो तो उस महीनेमें सुखहो तथा अरिष्ट कष्टका नाशहो ॥ २८४ ॥

अष्टमस्थो यदा सूर्यो जन्मलग्नेशसंयुतः॥
तदा गुह्येंद्रिये पीडा परितापफलप्रदा २८५॥

जो आठवें स्थानमें सूर्य जन्मलग्नके अधिपतिके साथ हो तो गुह्यन्द्रियमें पीडा दुःख फलकी देनेवाली है ॥ २८५ ॥

लग्नाधिपे केंद्रगते शुभेन दृष्टे युते वा बहुकष्टनाशम् ॥ करोति सौख्यं विविधं दशायां धनागमं कांतिविवर्द्धनं च॥२८६॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि लग्नका अधिपति केन्द्रमें प्राप्तहो और शुभ-ग्रहकी उसपर दृष्टि हो तो अपनी दशामें अनेक प्रकारका सुख, धनका आगम और कांतिकी वृद्धि होती है ॥ २८६ ॥

निरुद्यमत्वं निजमित्रकष्टं मन्ये सरुक्त्वं नृपतेर्भयं स्यात्॥धर्मार्थनाशंरिपुचोरभीतिं त्वभीष्टपीडा व्ययगेंथिहायाः ॥ २८७ ॥

यदि मुंथा बारहवें स्थानमें हो तो निरुद्यमें निज-मित्रोंको कष्ट धर्म अर्थका नाश चोरभीति और अभी-ष्टकी प्राप्ति न हो ॥ २८७ ॥

मासेश्वरः केंद्रगतो नराणां कर्मोदयं राज्य-विवर्द्धनं च ॥ स्त्रीणां विलासं धनधान्य-लाभं करोति हि स्निग्धसमागमं च २८८॥

यदि मासका अधिपति केन्द्रमें स्थितहो तो कर्मोदय राज्यकी वृद्धिहो स्त्रीका विलास धनधान्यका लाभ और इष्ट जनका समागम हो ॥ २८८ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मोश्वरः पंचमगः करोति धनागमं संत-
दिव सौख्यम्॥प्रतापवृद्धिं विजयं रिपूणां
र्थलाभं कथितं मुनीन्द्रैः ॥ २८९ ॥

मासाधिपति पंचमस्थानमें स्थित हो तो धनका
आऔर सन्ततिका सुख होताहै और प्रतापवृद्धि
शत्रु जय और सर्वार्थका लाभ होताहै ऐसा मुनींद्र
का॥ २८९ ॥

स्थो यदा भौमश्चंद्रेण यदि संयुतः॥
मासे महल्लाभं धनधान्यं स्त्रियः
॥ २९० ॥

ल तीसरे स्थानमें स्थित हो चन्द्रमाके साथ-
स महीनेमें महालाभ धनधान्य और स्त्रीका
है ॥ २९० ॥

रो भाग्यगतःकरोति धनागमं संत-
ौख्यम्॥प्रतापवृद्धिं विजयं रिपूणां
ाभं कथितं मुनीद्रैः ॥ २९१ ॥

धिपति भाग्यस्थानमें हो तो धनागम और
ख होताहै, प्रतापवृद्धि शत्रुओंसे जय और
होताहै यह मुनिजन कहते हैं ॥ २९१ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लग्ननाथो नवमगो भाग्यनाथो यदि सुते ॥ तदा मासे सुखं लाभो महाभाग्योदयो भवेत् ॥ २९२ ॥

जो लग्नका स्वामी नवमें स्थानमें स्थित हो भाग्यका पति पुत्रस्थानमें स्थित हो तो उस मा सुखलाभ भाग्योदय हो ॥ २९२ ॥

इति श्रीज्योतिषशास्त्रे पण्डितज्वालाप्रसादमिश्रकृत-भाषाटीकासहितः वर्षयोगसमूहः समाप्तः ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-

खेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस, बम्बई.

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्ण "लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" स्टी कल्याण-ठ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखानेकी परमोपयोगी, स्वच्छ, शुद्ध और सस्ती पुस्तकें।

यह विषय आज ४०। ५० वर्षसे अधिक हुआ भारतवर्षमें प्रसिद्ध है कि, इस छापाखानेकी छपी हुई पुस्तकें सर्वोत्तम और सुन्दर प्रतीत तथा प्रमाणित हुई हैं। इस यन्त्रालयमें प्रत्येक विषयकी पुस्तकें जैसे—वैदिक, वेदान्त, पुराण, धर्मशास्त्र, न्याय, मीमांसा, छन्द, ज्योतिष, सांख्यदार्शनिक, काव्य, अलंकार, चम्पू, नाटक, कोष, वैद्यक तथा स्तोत्रादि संस्कृत और हिन्दी भाषाकी प्रत्येक अवसरपर बिक्रीके अर्थ तैयार रहती हैं। शुद्धता, स्वच्छता तथा कागजकी उत्तमता और जिल्दकी बँधाई देशभरमें विख्यात है। इतनी उत्तमता होनेपर भी दाम बहुत ही सस्ते रक्खे गये हैं और कमीशन भी पृथक् काट दिया जाता है। ऐसी सरलता पाठकोंको मिलना असंभव है। संस्कृत तथा हिन्दीके रसिकोंको अवश्य अपनी २ आवश्यकतानुसार पुस्तकोंके मँगानेमें त्रुटि न करना चाहिये. ऐसा उत्तम सस्ता और शुद्ध माल दूसरी जगह मिलना असम्भव है. —) का टिकट भेजकर 'सूचीपत्र' मँगा देखो।

पता—

खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,
बम्बई.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh